B.A. Mass Communication

(1st Semester)

BAMC-104

Language and Media-1

Directorate of Distance Education

Guru Jambheshwar University of Science & Technology, HISAR-125001

CONTENTS

Sr. No.	TOPIC	Page No.
1	हिंदी भाषा का सामान्य परिचय	3
2	शब्द वचार	18
3	सृजनात्मक लेखन	33
4	प्रंट मी डया की भाषा	47

SUBJECT: LANGUAGE AND MEDIA-1(HINDI)	
COURSE CODE: BAMC-104	CHAPTER-1
हिंदी भाषा का सामान्य परिचय	

पाठ की संरचना **(LESSON STRUTURE)**

1.1 हिंदी के व वध रूप

1.1.2 जन व्यवहार की हिन्दी के क्षेत्र

1.2 भाषा की परिभाषा

1.2.1 भाषा के आधार

1.2.2 भाषा का स्वरूप

1.3.1 आदिकाल **(1000-1500)**

1.3.2 आधुनिक काल

1.4 हिंदी भाषा के व भन्न रूप

1.5 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री **(REFERENCE)**

हमारा भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ बंगला, अस मया, उ ड़या, हिन्दी, मराठी, गुजराती, कश्मीरी, त मल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम, कोंकणी, संधी, पंजाबी, इत्यादि भाषाएँ बोली जाती हैं।

1.1 हिंदी के व वध रूप

हिन्दी देश के एक बड़े भू-भाग में बोली जाती है। हम जिसे आज 'हिन्दी' कहते हैं, वास्तव में तो वह हिन्दी की एक बोली-खड़ीबोली का वक सत रूप है। यह दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर के आसपास बोली जाने वाली बोली है। इस खड़ी बोली में अन्य बो लयों के तत्त्वों का समायोजन करके हिन्दी भाषा बनी है। हिन्दी में कुल 18 बड़ी बो लयाँ हैं जो उसे बोले जाने वाले क्षेत्र के लोगों की मातृभाषा हैं; जैसे-हरियाणी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मगही मै थली, कन्नौजी, बुंदेली, मेवाती, मारवाड़ी, जयपुरी, गढ़वाली इत्यादि। बो लयों का क्षेत्र सी मत होता है और भाषा का वस्तृता बोलने के क्षेत्र की दृष्टि से हिन्दी को हम तीन रूपों में समझ सकते हैं:

(क) जनपदीय या आँच लक

(ख) राष्ट्रीय और

(ग) अंतरर्राष्ट्रीय

(क) जिसे हम हिन्दीभाषी क्षेत्र कहते हैं वह बड़ा व्यापक है। भौगो लक दृष्टि से एक ओर उत्तरांचल प्रदेश से लेकर हिमाचल, दिल्ली-हरियाणा, राजस्थान तक तो दूसरी ओर उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश से द क्षण में छत्तीसगढ़ तक फैला हुआ है। यहाँ के निवासी अपने-अपने क्षेत्रों में दैनिक व्यवहार में अपनी-अपनी बो लयाँ बोलते हैं, औपचारिक रूप से हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इस रूप में हिन्दी की बो लयाँ जनपदीय भाषा की भू मका निभाती हैं। इस वस्तृत भूभाग से बाहर देश के बड़े नगरों में हिन्दी का एक अलग रूप ही दिखाई देता है, जिसपर स्थानीय भाषा की शब्दावली, रूप रचना का प्रभाव दिखाई देता है, हम ऐसी को हिन्दी उन शहरों के नाम से पहचानते हैं; जैसे-बम्बइया (मुंबई) हिन्दी; कलकतिया (कोलकाता) हिन्दी, हैदराबादी (हैदराबाद) हिन्दी आदि। हैदराबाद, बीदर, गुलबर्गा आदि में बोली जाने वाली हिन्दी को दक्कनी (दक्खिनी) हिन्दी भी कहते हैं।

(ख) हिन्दी का राष्ट्रीय रूप खड़ी बोली पर आधारित है, जिसका मानकीकरण कया गया है। यह पूरे देश के लए औपचारिक भाषा है, इसे 'मानक हिन्दी' कहते हैं। यह हिन्दीभाषी राज्यों में राजकाज की भाषा के रूप में भी प्रयोग की जा रही है। वास्तव में खड़ी बोली हिन्दी का वकास उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ कन्तु इसका प्राचीनतम रूप ' पुरानी हिन्दी के नाम से दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में मलता है। तेरहवीं शताब्दी के अंत भाग में अमीर खुसरो ने खडी बोली में क वताएँ (पहे लयाँ मुकरियाँ) लखी; जैसे-

हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी।

राजाजी के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ी थी।

या

एक थाल मोती से भरा। सबके सर पर औंधा धरा।

चारों और वह थाली फरे। मोती उससे एक न गरे।

अमीर खुसरो ने इस भाषा के लए 'हिन्दी' तथा 'हिन्दुई' शब्द का प्रयोग कई स्थलों पर कया है।

हिन्दी के आरं भक वकास में नाथों, सद्धों तथा संतों का बहुत योगदान रहा। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी को पूरे भारत में पहुँचाया। अहिन्दी क्षेत्रों के कण्हपा (कर्नाटक), नामदेव और तुकाराम (महाराष्ट्र), नरसी मेहता तथा प्राणनाथ (गुजरात) आदि ने भी साहित्यिक हिन्दी 'के वकास में वशेष योगदान दिया। इनकी रचनाओं में हिन्दी की व भन्न बो लयों के अतिरिक्त पंजाबी, फारसी भाषा का प्रभाव भी है। इसी समय हिन्दी तीर्थस्थानों वा णज्य व्यवहार के क्षेत्र में भी व्यवहत हुई और एक संपर्क भाषा' के रूप में उसका वकास हुआ।

स्वाधीनता पूर्व इस भाषा ने व भन्न राष्ट्रीय आंदोलनों में महत्त्वपूर्ण भू मका निभाई. बंगाल में केशवचंद्र सेन और सुभाषचंद्र बोस; महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक; गुजरात में स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी आदि ने इसके

सार्वदे शक रूप के कारण इसे 'राष्ट्र भाषा' के लए उपयुक्त मानते हुए समूचे देश के लए इसे अपनाने पर जोर दिया। महात्मा गांधी ने इस राष्ट्रभाषा को 'हिन्दुस्तानी' नाम दिया। इसमें अरबी-फारसी तथा संस्कृत के प्रच लत शब्दों को बोचचाल की भाषा के रूप में स्वीकार लया। इस समय शैली की दृष्टि से हिन्दी के दो रूप प्रमुख दिखते हैं। (1) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी और (2) अरबी-फारसी म श्रत हिन्दी। भारतीय स्तर पर हिन्दी संपर्क भाषा है।

स्वाधीनता के बाद 14 सतम्बर 1949 को हिन्दी को संघ (भारत) की राजभाषा 'घो षत कया गया। हिन्दीभाषी प्रदेशों की मुख्य राजभाषा हिन्दी है। अहिन्दीभाषी प्रदेशों में वहाँ की अपनी प्रादे शक भाषाए 'राजभाषा ' बनी हैं; जैसे-गुजरात में गुजराती, महाराष्ट्र में मराठी, त मलनाडु में त मल तथा कर्नाटक में कन्नड़ इत्यादि। कुछ राज्यों ने हिन्दी या उर्दू को अपनी दूसरी राजभाषा घो षत कया हैं। (हिंदी भाषा का सामान्य परिचय)

पूरे भारत के स्तर पर हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र सामाजिक, साहित्यिक, शै क्षक, वैज्ञानिक, वा णज्यिक एवं प्रशासनिक आदि व भन्न कार्यक्षेत्रों तक फैला हुआ है। इनमें सामाजिक, साहित्यिक और शै क्षक क्षेत्रों की भाषा प्राय; जनभाषा के अ धक निकट है जब क वैज्ञानिक, वा णज्यिक, प्रशासनिक आदि क्षेत्रों की भाषा तकनीकी भाषा है। इस दृष्टि से हिन्दी के मुख्यतः दो रूप दिखाई देते हैं- (1) जन व्यवहार की हिन्दी (2) प्रयोजनरक कार्यक्षेत्रों की हिन्दी।

1.1.2 जन व्यवहार की हिन्दी के क्षेत्र:

सामाजिक संदर्भो तथा व्यावहारिक क्षेत्रों में प्रयोग होने वाली हिन्दी

सामाजिक संदर्भो तथा व्यावहारिक क्षेत्रों में प्रयोग होने वाली हिन्दी के मौ खक तथा ल खत दो रूप मलते हैं। कार्यक्षेत्र के अनुरूप इनका रूप भी अलग-अलग होता हैं। जनव्यवहार की हिन्दी के प्रमुख क्षेत्र निम्न ल खत हैं:

(1) सरकारी अ धकारियों, कर्मचारियों और सामान्य जनता के बीच संवाद।

(2) सभा-समारहो का संचालन।

(3) कसी सूचना की उद्घोषणा।

(4) चुनाव प्रचार के व्याख्यान।

(5) कसी मैच या घटना का आँखों देखा हाल।

(6) समाचार लेखन या वाचन आकाशवाणी, टेली वजन।

(7) समस्या निराकरण हेतु व भन्न वभागों-बैंक, पोस्ट ऑ फस या रेलवे आदि से सम्बं धत पत्र व्यवहार।

(8) फ़ल्म आदि से सम्बं धत पत्र व्यवहार इनकी शैली औपचारिक, अनौपचारिक या आत्मीय हो सकती हैं।

(2) प्रयोजनपरक कार्यक्षेत्रों की हिन्दी:

कसी भी देश के शासन के लए स्वीकृत भाषा राजभाषा कहलाती है। रजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा कुछ व शष्ट प्रयोजनों के लए प्रयुक्त होती है। हिन्दी के इस रूप को प्रयोजनमूलक हिन्दी ' के रूप में जाना जाता है। इसकी वस्तृत चर्चा अगले प्रकरण में की जाएगी।

(ग) आज हिन्दी का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हो रहा है। भारत के बाहर फीजी, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद और गुयाना आदि देशों में भारतीय मूल, के निवासी सांस्कृतिक महत्त्व की दृष्टि से हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। यूरोप के देशों, आस्ट्रे लया और ए शया महाद्वीप के अनेक देशों में जैसे चीन, जापान, कोरिया, आदि में वश्व वद्यालय स्तर पर हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा हैं। नेपाल, म्यांमार बांग्लादेश, श्रीलंका, पा कस्तान, मले शया, संगापुर आदि देशों में भारतीय बड़ी संख्या में व्यापार करते हैं। उनके जीवन में हिन्दी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

संक्षेप में, आज हिन्दी साहित्यिक भाषा होने के साथ-साथ भारत की 'राजभाषा' और संपर्क भाषा भी है। यह हमारी सामाजिक सांस्कृतिक एकता का माध्यम है। हिन्दी में देश की सामा सक संस्कृति की अ भव्यक्ति हुई है।

1.2 भाषा की परिभाषा

कुछ भाषा वैज्ञानिकों के द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाएं निम्न ल खत है -

स्वीट के अनुसार- ध्वन्यात्मक (ध्वनि से) शब्दों द्वारा वचारों का प्रकटीकरण की भाषा है।

पतंज ल के अनुसार- भाषा वह व्यापार है जिससे हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने वचारों को प्रकट करते हैं ।

प्लेटो ने- सो फस्ट में वचार और भाषा के संबंध में लखते हुए कहा है क वचार और भाषाओं में थोड़ा ही अंतर है। वचार आत्मा की मूक या अध्वयातमक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।

क्रोचे के अनुसार - भाषा अ भव्यक्ति की दृष्टि से उच्चरित एवं सी मत ध्वनियों का संगठन है।

इस तरह कोई भी परिभाषा अपने आप में पूर्ण नहीं है। प्रोफेसर रमन बिहारी लाल की व्याख्या इस संबंध में पूर्ण दिखाई देती है- भाव एवं वचारों की अ भव्यक्ति एवं सामाजिक अंतः क्रया के लए कसी समाज द्वारा स्वीकृत जिन ध्वनि संकेतों का प्रयोग कया जाता था। एक तरह से धोनी के माध्यम से ही वह अपने संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करता है। शक्षा का शुरुआती रूप मौ खक ही था। आज कल भी हम प्रतिदिन के व्यवहार में भाषा को ध्वनि रूप में ही प्रयोग करते हैं । इस तरह आज भी अ धकांश सामाजिक व्यवहार ध्वनि के माध्यम से मौ खक रूप में कया जाता है । ध्वनि ही वचारों और भावों की संवाहिका है। आज सूचना तकनीकी युग

में स्मार्टफोन वे कंप्यूटर ने भाषा के ध्वनि रुप को बड़ा दिया है।भाषण, वाद- ववाद, टेलीफोन, टेपरिकॉर्डर,सी.डी., कंम्पयूटर, स्मार्टफोन, बोलचाल में भाषा का ध्वनि रूप देखने को मलता है।

भाषा का ध्वनि रूप स्थाई नहीं माना जाता है इस लए ल खत रूप में भाषा हमेशा मौजूद रहती है। ल प ने ही मौ खक भाषा को ल खत रूप प्रदान कया है । अपने से दूर स्थित लोगों तक संदेश पहुंचाने के लए ल प रूप की ही आवश्यकता पड़ती है । ल प रूप हमेशा के लए स्थाई हो जाता है जिसको आने वाली पीढ़ी भी आसानी से पढ़ कर आत्मसात कर सकती है। इतिहास, संस्कृति, ज्ञान - वज्ञान एवं उसकी वकास प्र क्रया सभी को ल खत भाषा के द्वारा ही सुर क्षत रखा जा सकता है। आज सूचना तकनीकी के युग में भी ल खत भाषा का महत्व ज्यादा बढ़ गया है। कताबों की रचना, पत्र लखना, कार्यालय का काम भाषा का ल खत रुप है। भाषा को ल खत रूप देने के लए उसकी ल प का ज्ञान होना जरूरी है। जैसे -शब्दों की संख्या, बनावट व वाक्य रचना। हर भाषा को ल खत रूप के लए उसकी अपनी प्रकृति है जिस को जानना जरूरी है। भाषा के व्याकर णक रूप को समझना जरूरी है जिससे क लखें को समझ सके। यदि हिंदी भाषा को देखा जाए तो जैसी धनिया उच्चारण होगा ल खत रूप भी वैसा ही होगा। शब्दों को हम भाषा का शारीरिक व संरचनात्मक रूप मान सकते हैं।

1.2.1 भाषा के आधार

जैसा क हम सभी जानते हैं क मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य भाषा को सामाजिक अंतः क्रया द्वारा ही सीखता है। मनुष्य को अपनी दैनिक गति व धयों को पूरा करने के लए अपने हाव-भाव अ भव्यक्त करने पड़ते है जिसके लए वह अपने शारीरिक अंगों का प्रयोग करते हुए भाषा के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं इच्छाओं को दूसरों तक पहुंचाता है। इस तरह भाषा के भौतिक आधार में हम अपने ओस्ट,नाक, जिभ, गला इत्यादि के सहयोग से ध्वनियां मुखावयवों से उत्पन्न करते हैं । भाषा सीखने के लए सामाजिक माहौल का होना जरूरी है। सामाजिकता भाषा का मूल आधार है और इस आधार पर मनुष्य के शारीरिक अंगों का प्रयोग भौतिक आधार बन

जाता है। हर व्यक्ति का संबंध अपनी संस्कृति से होता है और भाषा का संस्कृति से गहरा रिश्ता है। समाज वशेष का माहौल व संस्कृति भाषा का स्वरूप बनाती है। भाषा शक्षण के अध्यापक को वद्या र्थयों के सामाजिक पर्यावरण की ओर ध्यान देना चाहिए जिससे वे बच्चों के स्वभाव को समझकर अध्यापन कर सकते हैं। अपने हाव-भाव व जरूरतों को पूरा करने के लए व्यक्ति के मन में वचार आते हैं। उन वचारों को व्यक्त करने के लए भाषा की जरूरत पड़ती है जो क मान सक क्रया के माध्यम से संभव है तो बिना वचारों के भाषा अस्तित्व में नहीं आ सकती। इस तरह समाज में जीवन जीने के लए भाषा का आधार हमारे लए मान सक वचार हैं, जैसे हम सोचते, पढ़ते , लखते हैं । भाषा शक्षण का शक्षक वद्या र्थयों क सोचने की वचार प्र क्रया को समझकर वद्या र्थयों की भाषा को सशक्त बना सकता है। भाषा से वद्या र्थयों के मान सक आधार को भी सशक्त बनाया जा सकता है।

1.2.2 भाषा का स्वरूप

प्रत्येक भाषा का अपना स्वरूप होता है। जिस तरह हर संस्कृति व समाज का भाषा पर प्रभाव पड़ता है उसी तरह भाषा भी वकास में परिवर्तन के कालों से से गुजरती रहती है । प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति होती है ले कन उसके स्वभाव को जानकर हम शक्षण कार्य में आसानी से अपने समझ बना सकते हैं। भाषा के स्वरूप की निबंध वशेषताएं हो सकती हैं ।

भाषा में मनुष्य अपने भावों को व्यक्त करने के लए व भन्न ध्वनियों का इस्तेमाल करता है जिससे वह अपने व दूसरों के भावों को समझ सके। ध्वनियों का सार्थक रूप होता है जिससे इनको समझा जा सकता है। ध्वनियों के कारण भाषा का आधार व प्रारं भक रूप मौ खक है। भाषा मौ लक रूप से मौ खक प्रकृति को अपनाकर ही उसका ल खत रूप धारण करती है। इस तरह मौ खक ध्वनियों से भाषा की उत्पत्ति हुई।

भाषा एक प्रकार से ल खत रूप में चन्हों के माध्यम से व्यक्त की जाती है। प्रत्येक भाषा में अपने वर्ण-अक्षर हैं, उनकी बनावट व वाक्य रचना का अपना स्वरूप है। भाषा के प्रचार-प्रसार में जिन्होंने बड़ी भू मका निभाई है जिससे आज सभ्यता व संस्कृति के पास अनुभव का ज्ञान का असी मत भंडार सुर क्षत है।

भाषा को यदि दुनिया भी तौर पर देखा जाए तो यह मनुष्य की वशेषता है। सभी जीव प्राणी अपने अपने तरीकों से अपने भाव व वचार व्यक्त करते हैं। ले कन वचार प्रधान एवं वकासशील भाषा तो मनुष्य की वशेषता व देन है।

भाषा वैज्ञानिकों का मत है क भाषा को बच्चा जन्म से ही सीख कर पैदा नहीं होता है। भाषा को बच्चा वातावरण से ही सीखता है। भाषा अपने आप प्राप्त नहीं होगी बल्कि उसे अर्जित करना पड़ेगा। बच्चा जिस परिवार ,मोहल्ला गांव या शहर में रहता है जहां उसका लालन-पालन होता है उन्हीं के द्वारा अपने भावों को व्यक्त करने के लए प्रयोग की जाने वाली भाषा बच्चा सीखता है। इस तरह भाषा को अर्जित कया जाता है यह कोई पैतृक संपत्ति नहीं है।

भाषा सामाजिक जीवन का एक आधार है। वचारों व हाव-भाव व्यक्त करने की इच्छा ही उसे दूसरे लोगों के संपर्क में लाती है। भाषा के बिना हम दैनिक कार्य नहीं कर सकते हैं। इस लए मनुष्य के जीवन के लए इसका महत्व बढ़ जाता है। बच्चा समाज में ही भाषा सीखता है व प्रयोग करता है, जिससे उसकी भाषा वक सत होती है। भाषा से सामाजिक व्यक्तित्व का वकास होता है जिससे सामाजिक दक्षता भी बच्चों के अंदर पैदा होती है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है जो की भाषा पर भी लागू होता है। हम अपने पूर्वजों की भाषा को समझें और आज की भाषा को तो बहुत अंतर दिखाई देता है। भाषा परिवर्तन मनुष्यों के परिवर्तन को भी दिखाता है। मनुष्य के वचारों व सभ्यता तथा संस्कृति में भी परिवर्तन होता रहता है। आज सूचना व संप्रेषण के दौर में मी डया की बढ़ती भू मका ने हिंदी के स्वरूप को तेजी से बदला है। भाषा में परिवर्तन ध्वनियों, शब्दों, पदबंधो तथा वाक्य रचना आदि के स्तर पर हो सकता है।

बचपन से ही हम बहुत सारे शब्दों को अनुकरण से ही सीख जाते हैं चाहे हम उसका अर्थ भले ही ना जानते हो। बच्चा सबसे पहले अपनी मां का अनुकरण करते हुए उसके हाव-भाव को समझता है। माता- पता व परिवार, मत्रों का अनुकरण करते हुए बच्चा भाषा सीखता है। बच्चा प्रौढों की अपेक्षा ज्यादा अनुकरण करता है। इस लए भाषा शक्षण के अध्यापक को अनुकरण की प्र क्रया को समझना चाहिए जिससे वह कक्षा गत शक्षण में ध्यान पूर्वक शक्षण करें क्यों क बच्चे उसका अनुकरण करेंगे।

भाषा का मूल रूप यानी मानक रूप होता है। भाषा में परिवर्तन होते रहते हैं ले कन फर भी उसके मानक रूप को बनाए रखना चाहिए नहीं तो भाषा में बहुत ज्यादा वकृतियां आ जाएंगी।

भाषा तथा उसकी ल प दोनों के ही मानक रूप का प्रयोग अपे क्षत है। भाषा शक्षण के अध्यापक को भाषा के मानक रूप को हमेशा ध्यान से रखना चाहिए।

कसी भी भाषा के वकास को उसके साहित्य में प्रयुक्त शब्दों के माध्यम से समझ सकते हैं।

कसी भी भाषा का इतिहास उस संस्कृति व सभ्यता का इतिहास होता है। कोई भी अकेला मनुष्य भाषा का वकास नहीं कर सकता है। इस लए उसे सामाजिक संपर्कों में आना ही पड़ता है।

1.3 हिंदी भाषा की उत्पत्ति एवं वकास

मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओं का काल 10 वीं सदी के आसपास समाप्त हो जाता है और वहीं से आर्य भाषाओं के वकास का काल आरंभ होता है। इस लए हिंदी सहित सभी समस्त आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति का काल 10 वीं सदी ही माना जाता है। यद्य प इन भाषाओं के वकास के सूत्र आठवीं नवीं शताब्दी के आसपास से ही मलने शुरू हो जाते हैं। पर 10 वीं शताब्दी से पूर्व की स्थिति भाषा का संक्रमण काल ही है। इसमें मध्यकालीन

भाषा अपभ्रंश के ह्रास और आधुनिक आर्य भाषाओं के वकास के चह्न देखे जा सकते हैं। अतः संक्रमण काल के बाद हिंदी का वकास 10 वीं शताब्दी से स्वीकार कया जाना चाहिए।

हिंदी भाषा के वकास की तीन अवस्थाएं मानी गई है।

1)आदिकाल **2)** मध्यकाल **3)** आधुनिक काल

1.3.1 आदिकाल (1000-1500)

यह समय राजनीतिक उथल-पुथल का युग था। इसमें भाषा का उपयुक्त वकास नहीं मलता। इस काल में भाषा के तीन रूप मलते हैं।

1) अपभ्रंशाभास

2) पंगल

3) डंगल

जिसमें सद्धों,नाथों और जैनियों का धा र्मक साहित्य उपलब्ध होता है , अपभ्रंशाभास है

पंगल- स्थानीय भाषा एवं मध्य देश या ब्रज की भाषा के म श्रत रूप का नाम पंगल है ।

पंकल उस समय के साहित्य में प्रयुक्त होने वाला मुख्य भाषा रूप है। डंगल वह भाषा रूप है जो अपभ्रंश और राजधानी के मश्रण से बना है। चारों की वीरगाथा त्मक रचनाओं की भाषा डंगल ही है जिसमें रासो ग्रंथ प्रमुख है। इन भाषा रूपों के अतिरिक्त 2 भाषा रूप और दृष्टिगोचर होते हैं। पहला पुरानी हिंदी रूप और दूसरा पुरानी मै थली का रूप। इसमें अरबी फारसी के शब्दों का प्रधान्य है और और दूसरा रुप वद्यापति की रचनाओं में मलता है। हिंदी

की प्रारं भक अवस्था के काल इस काल में व भन्न बोलीयों, उपबो लयों और उप भाषाओं का अंतर स्पष्ट नहीं होता ,बल्कि प्रत्येक भाषा रूप में अन्य रूपों का मश्रण दिखाई देता है।

डंगल- इस काल की हिंदी भाषा में अपभ्रंश की सभी ध्वनियां आ गई थी । 'ए.औ' जैसी संयुक्त धनिया भी अपना अलग रूप धारण कर चुकी थी। अपभ्रंश में तद्भव शब्दों का प्राधान्य था। यह प्रवृत्ति आदि काल इन हिंदी में भी मलती है । मुसलमानों के साथ बढ़ते संपर्क के कारण इस काल की भाषा में फारसी, अरबी, तुर्की आधी मुस्लिम भाषाओं के अनेक शब्द आ गए। इस कॉल की रचनाओं में उस भाषा का स्वरूप है तो सही पर उसमें मश्रण भी है। इस काल में भाषा का शुद्ध रूप खोजा जाना कठिन है।

इस समय देशी भाषाओं का वकास हुआ। इसमें काव्य लखा गया। काव्य ग्रंथों की टिकाई लखी गई। ले कन यत्र तत्र गद्य की भी कुछ झलक मलती है। इस काल में भाषा के दो मुख्य रूप वक सत हुए -ब्रज एवं अव ध। शौरसेनी अपभ्रंश से ब्रज का रूप वक सत हुआ। हिंदी अक्षर के पश्चिमी हिस्से में भाषा का वही रूप व्यहत है। अर्धमगधी अपभ्रंश से अव ध का रूप वक सत हुआ। यह पूर्वी से में प्रच लत है। अव ध के वकास में तुलसीदास,कुतुबन ,मंझन और जायसी ने वशेष योग दिया। ब्रिज के वकास में सूरदास ब्रज के वकास में सूरदास और नंददास आदि का योग सराहनीय है। अवधी का प्रसार मध्यकाल के मध्य तक ही रहा। ले कन ब्रज का प्रसार ने केवल मध्यकाल के मध्य तक रहा अ पतु समस्त हिंदी क्षेत्र तक फैला। ब्रज में क वता आधुनिक काल में भी हुई। जगन्नाथ रत्नाकर , सत्यनारायण क व रत्न मैं ब्रज का प्रभाव देखा जा सकता है। पं डत अयोध्या संह उपाध्याय 'हरिऔध' तक ने प्रारंभ में ब्रज में ही क वता की।

बृज और अव ध के अतिरिक्त हिंदी का खड़ी बोली पर आधारित द क्षणी रूप भी दिखाई दिया। दखनी का वकास 12 वीं शताब्दी के आसपास उत्तर भारत में उर्दू के रूप में परिल क्षत हुआ।

इस काल के शासकों की दरबारी भाषा फारसी थी। फांसी का प्रचार प्रसार युग में प्रमुख हुआ।

इस लए इस भाषा में अरबी ,फारसी व तुर्की शब्दों ने प्रधानता ग्रहण की। इस लए उर्दू की ध्वनियों - क,ख,ग,घक्ष आदि ध्वनियां हिंदी में समाहित हुई। धा र्मक साहित्य की प्रधानता के कारण इस काल की भाषा में संस्कृत एवं तत्सम शब्दों का भी प्रचलन हुआ। अंग्रेजों ,फ्रांसीसी यों के संपर्क में आने के कारण इनकी भाषाओं के अनेक शब्द हिंदी में स्थान पा गए।

1.3.2 आधुनिक काल

18 वीं सदी में उत्तरार्ध के आ खर में और 19वीं सदी के प्रारंभ में हिंदी भाषा का आधुनिक रूप दिखने लगता है। अंग्रेजों ने इस समय अपने धर्म प्रचार में शासन के लए जनसाधारण में भाषा के प्रचार के लए फोर्ट व लयम कॉलेज की स्थापना की। ले कन अ ारह सौ से 1950 तक का समय भाषा की दृष्टि से संक्रांति काल था। इस दौरान हिंदी का स्वरूप पूर्णता दिखाई नहीं देता। यह तो केवल से संपूर्ण निर्धारण का प्रयास भर दिखाई देता है। 18 सो 50 के आसपास तक हिंदी का स्वरूप और उस भाषा की दिशा निश्चित हुई। इसी दिशा में भारत में भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके अन्य सहयोगी लेखक, महावीर प्रसाद द् ववेदी एवं उनके बाद के रचनाकारों ने गद्य-पद्य की भाषा का नया रूप अपनाया। हिंदी के स्वरूप के अतिरिक्त युग में अनेक सहभाषाओं और बो लयों और बो लयों का वकास हुआ। इस कॉल मी भाषा में तत्सम शब्दों का प्रधान्य हुआ। ज्ञान वज्ञान के अनेक भाषाओं के शब्द सम्मानित हुए। इनका मूल आधार संस्कृत शब्दावली निश्चित हुआ। अन्य भारतीय भाषाओं, आर्य भाषाओं, और आर्येतरतक भाषाओं की शब्दावली भी हिंदी में ग्रहण की गई। समर्थ साहित्यकारों ने अनेक शब्द भी नि र्मत कए। अंग्रेजी भाषा प्रभाव के कारण (आ) जैसी नई ध्वनि वक सत व समा वष्ट हुई।

1.4हिंदी भाषा के व भन्न रूप

अपभ्रंश के बाद हिंदी के अनेक रूप वक सत हो गए। ब्रज और अव ध के बाद खड़ी बोली का वकास हुआ। हिंदी के व भन्न रूपों को इस प्रकार समझा जा सकता है-

परिनिष्ठित हिंदी- परिनिष्ठित हिंदी को राष्ट्रभाषा के नाम से अ भहित कया गया है। यह साहित्य , शक्षा और प्रशासन की भाषा है। इसकी संरचना का मुख्य आधार पश्चिमी हिंदी की खड़ी बोली है। कंतु फांसी अंग्रेजी के प्रभाव के कारण इसकी ध्वन्यात्मक और व्याकरणात्मक संरचनाओं में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। एसके शब्द भंडार का मूल स्त्रोत संस्कृत शब्दावली है। संस्कृत शब्दों के आधार पर अनेक नए शब्दों की रचना हुई है। इसमें यूरोप की अन्य भाषाओं के शब्दों की संख्या भी प्राप्त है। इस भाषा को बोलने वालों की बड़ी संख्या है। वचार अ भव्यक्ति के कारण यह सभी भाषाओं में श्रेष्ठ है।

उर्दू- उर्दू तुर्की भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है पड़ाव। श वर, फौजी पड़ाव या खेमा आदि। शाही पड़ाव को उर्दू ए मुअलला कहा जाता है। पड़ाव में प्रयुक्त होने के कारण यह जबान-ए-उर्दू कहलाई।

उर्दू की उत्पत्ति ब्रज पंजाबी और संधी से बताई जाती है। ले कन इसका आधार दिल्ली और इसके आसपास का क्षेत्र है। दिल्ली राजधानी होने के कारण मुसलमान शासकों ने दिल्ली के आसपास की बोली को अपनाया और उसमें उर्दू फारसी के शब्दों का प्रयोग कर कामचलाऊ भाषा को जन्म दिया। उर्दू की उत्पत्ति 13 वी सदी के आरंभ में मानी जाती है।

हिंदुस्तानी - हिंदुस्तानी हिंदी-उर्दू के बीच की भाषा है। इसमें संस्कृत और फारसी के सरल शब्दों का प्रयोग है। यह भी दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में ही जन्मी ,फली और फूली है। से हिंदू और मुसलमान दोनों ही बोलते थे। अंग्रेजों की कूटनीति के कारण उर्दू मुसलमानों की और हिंदी हिंदुओं की भाषा कहीं जाने लगी। बाद में दोनों संप्रदायों में तनाव के हालात भी बने पर महात्मा गांधी ने दोनों में मेल मलाप को बढ़ावा देने के लए ऐसी भाषा का प्रस्ताव रखा जिसमें ने संस्कृत के कठिन शब्द थे और उर्दू के मुश्किल। वस्तुतः हिंदुस्तानी हिंदी क वह शैली है जिसमें बोलचाल की सबकी समझ में आने वाले शब्दों की अ धकता है वह संस्कृत या फारसी के शब्दों के प्रति आग्रह नहीं है।

दक्खिनी - द खनी शब्द द क्षण में ई प्रत्यय लगाकर बना है। साधारण शब्दों में इसका अर्थ है द क्षण में प्रच लत भाषा वस्तुतः यह 14वीं 15वीं शताब्दी की खड़ी बोली पर आधारित है। मुस्लिम साम्राज्य के वस्तार के साथ यह अहमदाबाद बीजापुर और गोलकुंडा पहुंची। वहां पहुंचकर द क्षण की भाषाओं के प्रभाव के कारण दक्खिनी हिंदवी कहलाने लगी। दक्खिनी को द क्षणी का राजाश्र्य मला । व्याकरण और शब्द भंडार के कारण दक्खिनी हिंदवी और उत्तर भारत की हिंदवी में कोई वशेष अंतर नहीं। पर मुसलमानों के द्वारा प्रयुक्त होने के कारण उसके लए फारसी ल प का प्रयोग होने लगा। खड़ी बोली गद्य की प्रारं भक रचना मराजुल-आ शकीन दक्खिनी हिंदवी में ही उपलब्ध है। द क्षणी के साहित्यकारों में सैयद गेसू दराज, बंदा नवाज, सैयद मोहम्मद हुसैनी, अब्दुल्लाह वेलूरी , गुलाम अली निजामी शेख अशरफ आदि की रचनाएं वशेष लोक प्रय हुई। दक्खिनी हिंदी के अंतिम क व वली थे। यह उर्दू के बड़े शायर माने जाते हैं। 17 वी शताब्दी में औरंगाबादी की दिल्ली यात्रा के बाद द क्षणी में नया मोड़ आया। तब से इसमें arabi-farsi का प्रभाव बढ़ा। हैदराबाद में निजामी सल्तनत में यह राजभाषा बनी। राजकीय संरक्षण के बाद इसका काफी प्रचार बढ़ा। दक्खिनी यों तो दक्खिन ही बोली है। पर यह द क्षण के बाहर भी बोली जाती है। इसके अन्य नाम दक्खिनी ,दक्खिनी ,देहलवी गुजरी, दक्खिनी हिंदी ,दक्खिनी उर्दू मुसलमानी, दक्खिनी हिंदुस्तानी है।

SUBJECT: LANGUAGE AND MEDIA-1(HINDI)	
COURSE CODE: BAMC-104	CHAPTER-2
शब्द वचार **(Morpholog)**	

पाठ की संरचना **(LESSON STRUTURE)**

2.1 शब्दों का वर्गीकरण

2.2. रचना के आधार

2.3 शब्द-भंडार **(Vocabulary)**

2.4 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री **(Reference)**

वर्ण ध्वनियों का बोला और लखा जाने वाला रूप है। वर्गों के मेल से शब्द बनते है। शब्द वर्णों का व्यव और सार्थक समूह है। जिस ध्वनि समूह का कोई अर्थ नहीं निकलता वह शब्द नहीं है, जैसे 'कनम'। इन वर्णक्रम बदल देने पर बनता है 'नमक' अब यह एक निश्चित अर्थ को अ भव्यक्त करने वाला शब्द है। वर्णों का ऐसा सार्थक समूह जिसका निश्चित अर्थ होता है, शब्द कहलाता है। जब शब्दों का प्रयोग वाक्य में कया जाता है तो ये 'पद' कहलाते हैं। शब्दों के वशाल भंडार से भाषा बनी।

शब्द कई प्रकार के होते हैं। शब्दों को ठीक से समझने के लए शब्दों का चार प्रकार से वर्गीकरण कया गया है.

2.1 शब्दों का वर्गीकरण

1. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर शब्द के भेद-

रचना के आधार पर

प्रयोग के आधार पर

अर्थ के आधार पर

उत्पत्ति का अर्थ है उत्पन्न होना या वह मूल स्रोत जहाँ से कोई शब्द आया है हिंदी भाषा का जन्म संस् से हुआ है। अतः संस्कृत के बहुत से शब्द थोड़ा रूप बदलकर हिंदी में मलते हैं हिंदी की बहुत-सी बो लयों। शब्द मी हिंदी भाषा में आ गए हैं। वदेशी शासकों भारत आने के परिणामस्वरूप अनेक वदेशी शब्द भी हिंदी अपना लए हैं। इस आधार पर ये पाँच प्रकार के होते हैं-

स्रोत / उत्पत्ति

तत्सम

तदभव

संकर

देशज

वदेशी

(क) तत्सम शब्द संस्कृत भाषा के ये शब्द जो बिना बदले हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयोग कए जाते तत्सम शब्द कहलाते हैं, जैसे- रात्रि, ज्येष्ठ, दंत, क्षेत्र, पत्र, कर्म, अग्नि आदि।

(ख) तद्भव शब्द संस्कृत भाषा के वे शब्द जो कुछ परिवर्तित होकर सरल रूप में हिंदी में प्रयोग क -- जाते हैं तद्भव शब्द कहलाते हैं जैसे- राव, जेठ, दाँत, खेत, पत्ता, काम, आग आदि।

तत्सम शब्दों के तद्भव रूप इस प्रकार है-

तत्सम तद्भव

भ्रमर भौरा

आग अग्नि

अंबा अम्मा

जीवा जीभ

नव नया

स्वर्ण सोना

सर्प सांप

कर्ण कान

मोर मयूर

मस्तक माथा

घर गृह

अश्रु आँसू

आम्र आम

घोटक घोड़ा

स्कन्ध कंधा

उच्च ऊँचा

ओष्ठ होंठ

(ग) देशज शब्द जो शब्द देश के व वध क्षेत्रों में बोली जाने वाली आम बोलचाल की भाषा से हिंदी अपना लए गए हैं, वे देशज शब्द कहलाते है जैसे धोती, लोटा, खचड़ी, डव्या, पेट, झाड़ू आदि।

(घ) वदेशी शब्द हमारे देश पर बहुत समय तक वदे शयों का अ धकार रहने के कारण वदेशी भाषाओं के बहुत से शब्द हिंदी में आ गए हैं। इन शब्दों को वदेशी शब्द कहते है, जैसे- जहाज़, डॉक्टर, कारतूत, कंप्यूटर, स्कूल, तोप, अलमारी, बालटी आदि ।

(ङ) संकर शब्द अनेक भाषाओं का हिंदी पर प्रभाव होने के कारण हिंदी में दो भाषाओं के मेल से भी बहुत से शब्द बन गए है। इन्हें संकर शब्द कहते हैं, जैसे- रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिंदी) = रेलगाड़ी

योजना (हिंदी) कमीशन (अंग्रेज़ी) योजना कमीशन

माँग (हिंदी)+ पत्र (संस्कृत)

पड़ी (हिंदी) + साज़ (अरबी)

वर्ष (संस्कृत) गाँठ (हिंदी)= वर्षगाँठ

टिकट (अंग्रेज़ी) घर (हिंदी)= टिकटघर

रेल (अंग्रेजी) यात्रा (संस्कृत) रेलयात्रा -

2.2 रचना के आधार

रचना के आधार पर शब्द के भेद- वर्गों के योग से राज्यों की रचना होती है। इस बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं-

रचना/ बनावट: 1. यौ गक 2. रूढ़ 3. योगरूढ़

(क) रूढ़ शब्द - रूद शब्दों के सार्थक खंड नहीं कए जा सकते। ये परंपरा से कसी वशेष अर्थ के है. - प्रयोग कए जाते रहे हैं, जैसे- महल, बगीचा, पानी, शेर, पेड़ आदि (ख) यौ गक शब्द जो शब्द वो अथवा दो से अ धक शब्दों से बनते हैं, उन्हें यौ गक शब्द कहते हैं। इन शब्दों के सार्थक खंड कए जा सकते हैं। यौ गक शब्द सं ध, समास, उपसर्ग और प्रत्थय के पह बनाए जाते हैं, जैसे- पुस्तकालय, दूधवाला, राजपुत्र, दुर्गंध, ऐतिहा सक आदि। (ग) योगरूढ़ शब्द - ये शब्द यौ गक होते हैं पर कसी वशेष अर्थ के लए रूढ़ हो जाते हैं। प्रायः बहु समास से बने शब्द योगरूद शब्द होते हैं जैसे-

लंबे उदरवाला= लंबोदर (गणेश)

जल में जन्म लेने वाला= जलज (कमल)

3. प्रयोग के आधार पर शब्द के भेद- शब्दों के इस वर्गीकरण को व्याकर णक प्राकार्य पर कया गया भेद भी कहते हैं। वाक्य में शब्दों का प्रयोग क रूप में कया जाता है। इस आधार पर शब्दों के दो भेद हैं-

प्रयोग - 1 वकारी 2 अ वकारी

(क) वकारी शब्द इन शब्दों में लंग, वचन, कारक, काल, वाच्य आदि के कारण वकार उत्पन्न हो जाता है। वकारी शब्द चार प्रकार के हैं-

(क) संज्ञा

(ख) सर्वनाम

(ग) वशेषण

(घ) क्रया

उदाहरण- लड़की खाना खा रही है।

लड़ कयाँ खाना खा रही है।

हम कल वद्यालय गए थे।

आप आज वद्यालय जा रहे है।

(ख) अ वकारी शब्द वाक्य में प्रयोग कए जाने पर जिन शब्दों में लंग, वचन, कारक, काल, - आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता उन्हें अ वकारी शब्द कहते हैं। ये चार प्रकार के हैं जैसे- (क) क्रया वशेषण

(ख) संबंधबोधक

(ग) समुच्चयबोधक

(घ) वस्मयादिबोधक

लड़की धीरे-धीरे चलती है।

बच्चा धीरे-धीरे चलता है।

(प्रयोग के आधार पर शब्द के भेदों के वषय में अगले अध्यायों में वस्तार से जानकारी दी गई है।

4. अर्थ के आधार पर शब्द के भेद-

कुछ शब्दों का एक अर्थ होता है कुछ के कई अर्थ होते हैं। कुछ शब्द परस्पर एक-दूसरे के वलोम होते हैं तो. कुछ शब्द सुनने में एक से लगते हैं परंतु उनके अर्थ भन्न- भन्न होते है। अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्न ल खत भेद हैं:

अर्थ:

एकार्थक शब्द

अनेकार्थक शब्द

पर्यायवाची शब्द

वलोम शब्द

श्रुतिसम भन्नार्थक शब्द

(आगे के अध्यायों में इनके वषय में वस्तृत जानकारी दी गई है)

आओ दोहराएँ

· वर्गों का वह सार्थक समूह जिसका एक निश्चित अर्थ होता है, शब्द कहलाता है।

◦ शब्दों का वर्गीकरण चार आधार पर कया जा सकता है-

उत्पत्ति के आधार पर शब्द पाँच प्रकार के होते है-वत्सम तद्भव, देशज, वदेशी और शंकर

रचना के आधार पर शब्द होते है-रूढ़, यौ गक योगरूढ

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते है- वकारी, अ वकारी

वकरी शब्दों के चार भेद है- संज्ञा, सर्वनाम, वशेषण, कया अ वकारी शब्द चार प्रकार के होते है- क्रया वशेषण, संबंधोधक, समुव्ययधीक वस्मयादिबोधक

अर्थ के आधार पर शब्द के एक अनेक पर्यायाची, वलोम राज्य, श्रुतिसम भन्नार्थक शब्द

2.3 शब्द-भंडार (Vocabulary)

पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

शब्द लगभग एक-सा अर्थ बताते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। यद्य प इन शब्दों का अर्थ समान होता है, पर उसमें सूक्ष्म-सा अंतर होता है। कुछ पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण इस प्रकार है-

१.आकाश-अंबर, गगन, नभ

2. अमृत: सोम, पीयूष, सुधा

3. अचल- गरि, पर्वत, पहाड़

4.आअग्नि, पावक, अनल

5. कमल-नीरज, पंकज, अर वंद

6.अहंकार-गर्व, घमंड, अ भमान

7.आनुपम-अनोखा, निराला, अभूतपूर्व

8. अनिल-हवा, पवन, समीर

9. अति थ-मेहमान, पाहुना, आगंतुक

10.अश्व-हय, तुरंग, घोड़ा

11. आँख -चक्षु, नेत्र, लोचन

12. उल्लास-खुशी, प्रसन्नता, हर्ष

13.इच्छा-कामना, लालसा, अ भलाषा

14. ईस्वर-परमेश्वर, भगवान, प्रभु

वलोम शब्द **(Antonyms)**

जो शब्द एक दूसरे का वपरीत अर्थ बताते है, उन्हें वलोम शब्द कहते हैं। वलोम शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

चंतित * निश्चिंत

उत्तम* अधम

उदय* अस्त

जीवन x मृत्यु

जन्म*मरण

* सुप्त जाग्रत

वष* अमृत

उधार* नगद

उपयोगी अनु चत

ठोस*तरल

प्रतिकूल *अनुकूल

अनुपयोगी*उपयोगी

सज्जन दुर्जन

उपकार*अपकार

सबल*दुर्बल

दुर्लभ x सुलभ

अनेक शब्दों के लए एक शब्द **(One Word Substitution)**

संक्षेप में लखना कला है। अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से संक्षेप में कहने के लए ऐसे शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है जो वाक्यांशों के स्थान पर प्रयोग कए जाते हैं। अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयोग कए जाने वाले शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार है- जिसका जन्म न हुआ हो-अजन्मा

2. जो दिखाई न दे- अदृश्य

3. जिसका अंत न हो-अनंत

4. जो कहा न जा सके - अकथनीय

5. जिसे पढ़ा न गया हो- अपठित

6. कम भोजन करने वाला-अल्पाहारी

7. जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो-अजातशत्र

8. बिना वचार कए कया गया वश्वास- अंध वश्वास

9. जिसके आने की ति थ निश्चित न हो-अति थ

10 जो कभी न हो सके- असम्भव

11. ऊपर कहा गya- उपर्युक्त

12. जो पहले हुआ हो-भूतपूर्व

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द **(Words apparently similar in meaning)**

वे शब्द जिनमें अर्थ की दृष्टि से बहुत कम अंतर होता है, एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहलाते है। ये अर्थ की दृष्टि से एक समान लगते हैं। नीचे कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे है जो एकार्थक प्रतीत होते हुए भी समान अर्थ नहीं रखते।

1.अवस्था आयु

-जीवन का एक भाग

पूरा जीवन

2. अमूल्य

बहुमूल्य

3आज्ञा

अनुमति

4. अहंकार

अ भमान

5. प्रचार

प्रसार

6. प्रणाम नमस्ते

7. ग्रंथ पुस्तक

8. सम्राट

एक्सप्लेंन=

2.जो वस्तु मूल्य देकर भी प्राप्त न हो

जो बहुत कीमती हो

3बड़ों द्वारा छोटों को कुछ करने के लए कहना

कसी कार्य के लए सहमति

4झूठा घमंड

योग्यता होने पर अपना महत्त्व दिखाना

5-कोई वषय मत या बात सबके सामने रखना फैलाव -

6.बड़ों और गुरुजनों के लए छोटे-बड़े सभी के लए

7- बड़ी और महत्त्वपूर्ण पुस्तक: कोई भी कताब

भ्श्रुतिसम शब्द (Similar words with different meaning) हिंदी में कुछ राज्य ऐसे हैं जिनका उच्चारण लगभग समान होता है परंतु लखते समय वर्तनी में थोड़ा-सा

अंतर होता है। इनका अर्थ भी निन्न होता है। ऐसे शब्दों को श्रुतिसम भन्नार्थक शब्द कहते हैं।

1अचल-पहाड़ पृथ्वी

- अचला- पृथ्वी

2. अनल- आग

अनिल- हवा

3 अव ध- समय

अवधी-अवध क्षेत्र की भाषा

4 अंक- संख्या, गोद

अंग- शरीर का भाग

5 आदि- आरम्भ

आदी- अभ्यस्त

6 तरणी- नौका

तरुणी- युवती

7 क ल- क लयुग

कली- फूल खलने से पहले का रूप

8 छात्र- वधार्थी

छत्र - छाता

9 चपल- चंचल

चपला- बिजली

10 दशा- हालत

दिशा - उत्तर – द क्षण

2.4 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री **(REFERENCE)**

- भाषा और हिंदी भाषा का इतिहास, प्रौ नरेश मश्र,वाणी प्रकाशन
- व्यवहारिक हिंदी व्याकरण, संजय प्रकाशन
- शब्दार्थ प्रयोग,डा हरदेवबाहरी, अ भव्यक्ति प्रकाशन
- आधुनिक मी डया लेखन एवं हिंदी रचना, डा अशोक बत्रा , लक्ष्मी पब्लिकेशन
- [मी डया लेखन,डा चन्द्रप्रकाश,संजय प्रकाशन
- "मी डया अध्ययन: महत्वपूर्ण मुद्दे और वाद- ववाद" - ई वन देवेरक्स
- "भाषा और मी डया: छात्रों के लए एक संसाधन पुस्तक" - एलन ड्यूरेंट
- "मी डया और भाषा: वद्या र्थयों के लए एक सम्प्रेषण पुस्तक" - व. जेम्स पॉटर
- "पत्रकारिता नैतिकता: एक दार्शनिक दृष्टिकोण" - क्रस्टोफर मेयर्स
- "मी डया, भाषा, और पहचान: एक परिचय" - डे वड गॉन्टलेट

SUBJECT: LANGUAGE AND MEDIA-1(HINDI)	
COURSE CODE: BAMC-104	CHAPTER-3
सृजनात्मक लेखन	

3.1 सृजनात्मक लेखन

3.2 पटकथा लेखन

3.2.1 नाटक लेखन - नाटक लखने का व्याकरण

3.3 कहानी लेखन

3.4 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री **(REFERENCE)**

3.1 सृजनात्मक लेखन

सृजनात्मक लेखन (क्रएटिव राइटिंग) का उद्देश्य सू चत करना मात्र ही नहीं, अ पतु रहस्यों व रसों को उद्घाटित करना होता है। इसे कुछ लोग एक आध्यात्मिक प्र क्रया मानते हैं। रचनात्मक लेखक कभी तटस्थ रूप से दुनिया की ठोस चीजों के बारे में बात करता है तो कभी भाव वह्वल होकर वह प्रेम, प वत्रता, पलायन, ईश्वर, नश्वरता आदि वषयों के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करता है। अन्यथा लेखन में वह अपनी अपूर्व कल्पना का इस्तेमाल करता है। वह जीवन के व भन्न पहलुओं में संबंध बनाता है और सामाजिक स्थितियों और घटनाओं के वषय में लखता है। इस प्रकार वह अपने लेखन में अपने ह्रदय के निकट के वषयों को प्रका शत करता है, उन्हें ऊँचा उठाता है और लेखन के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

सृजनात्मकता सभी कलाओं की प्राथ मक प्रेरणा है। इसे परिभा षत करना वैसे ही काल्पनिक एवं कठिन है जैसे क प्यार और घृणा जैसे वषयों को परिभा षत करना। सृजनात्मकता एक आदर्श वैचारिकता है जो एक कलाकार के मस्तिष्क की कल्पनापूर्ण स्वाभा वक प्रवृति है तथा कलाकार से संबं धत उसके अतीत और वर्तमान के परिवेश से प्रभा वत है।

प्रभावशाली सृजनात्मक लेखन निम्न ल खत कार्य करता हैः

(१) पाठकों का ध्यान आक र्षत करता है,

(२) पाठकों में रू च व इच्छा जागृत करता है।

सृजनात्मक लेखन अर्थात् नूतन निर्माण की संकल्पना, प्रतिभा एवं शक्ति से नि र्मत पदार्थ (लेख)। सृजनात्मकता को ही कॉलरिज कल्पना कहता है। कल्पना अर्थात्- नव-सृजन की वह जीवनी शक्ति जो कलाकारों, क वयों, वैज्ञानिकों और दार्शनिकों में होती है।

3.2 पटकथा लेखन

टीवी सीरियल हो या फल्म थयेटर इनकी नीव में होता हैं राइटिंग यानी लेखन. फल्म व टेली वजन जगत में जो फल्मांकन शूटिंग कया जाता हैं या थयेटर में जो भी मंच पर प्रस्तुत होता हैं उसे पहले कागज पर इस तरह लखा जाता हैं क निर्देशक के सामने एक एक दृश्य जीवंत हो जाए.

फल्म या टीवी प्रोग्राम के लए स्क्रिप्ट राइटिंग का कार्य तीन चरणों में कया जाता हैं. पहले कहानी लखी जाती हैं. फर स्क्रीन प्ले या पटकथा तैयार की जाती हैं और अंत में लखे जाते हैं.

डायलोग या संवाद. कहानी, पटकथा और संवाद जितने मजबूत होंगे, शूटिंग और उसके बाद होने वाला पोस्ट प्रोडक्शन का कार्य उतना ही आसान रहेगा.

जहाँ लेखक और साहित्यकारों का वास्ता कागज और कलम तक सी मत होता हैं, वहीँ टीवी प्रोग्राम और फल्म लखने वालों को अपनी कला को परफो र्मंग आर्ट में तब्दील करना होता हैं. कसी फल्म में स्क्रिप्ट का महत्व यह हैं क कई बार घटिया स्क्रिप्ट होने की वजह से बड़े से बड़े बजट और नामी सतारों से लदी हुई फल्म फ्लॉप हो जाती हैं. दूसरी ओर एक मजबूत स्क्रिप्ट को कसे हुए डायरेक्शन के साथ परदे पर उतारा जाए तो छोटे कलाकारों और मामूली बजट वाली फ़ल्में भी दर्शकों के दिल में उतर जाती हैं.

3.2.1 नाटक लेखन - नाटक लखने का व्याकरण

यहां दृश्य काव्य अर्थात नाटक का व्याकर णक रूप का अध्ययन करेंगे। नाटक दृश्य काव्य भी कहा जाता है। अन्य काव्य तथा साहित्य में पढ़ने सुनने तक का दायरा सी मत रहता है , कंतु इसके अंतर्गत देखने का भी गुण है। यही कारण है क इसे रंगमंच का पूरक माना गया है अर्थात नाटक वह साहित्य है जो रंगमंच पर प्रस्तुत कया जा सकता है , उस का मंचन कया जा सकता है। व्याकरण से हमारा संबंध नाटक के तत्व और उसकी रचना से है।

यहां आप इन्हीं बिंदुओं पर अध्ययन करेंगे।

नाटक कसे कहते है

नाटक एक दृश्य वधा है। इसे हम अन्य गद्य वधाओं से इस लए अलग नहीं मानते हैं क्यों क नाटक भी कहानी , उपन्यास , क वता , निबंध आदि की तरह साहित्य के अंतर्गत ही आती है। पर यह अन्य वधाओं से इस लए अलग है , क्यों क वह अपने ल खत रूप से दृश्यता की ओर बढ़ता है।नाटक केवल अन्य वधाओं की भांति केवल एक आगामी नहीं है।

नाटक का जब तक मंचन नहीं होता तब तक वह संपूर्ण रूप व सफल रूप में प्राप्त नहीं करता है।

अतः कहा जा सकता है क नाटक को केवल पाठक वर्ग नहीं , दर्शक वर्ग भी प्राप्त होता है।

साहित्य की गद्य वधाएं पढ़ने या फर सुनाने तक की यात्रा करती है। परंतु नाटक पढ़ने, सुनने और देखने के गुण को भी अपने भीतर रखता है।

नाटक के तत्व या अंग घटक

व्याकरण की दृष्टि से नाटक को एक निश्चित रूप रेखा के अंतर्गत लखा जाना चाहिए। इसके प्रमुख तत्व तथा घटक निम्न ल खत है -

1 समय का बंधन

नाटक का मंचन सदैव वर्तमान काल में कया जाता है , जिसे एक निश्चित समय के अंतराल पर आरंभ तथा समापन कया जाना चाहिए। नाटककार को समय प्रबंधन का वशेष ध्यान रखना चाहिए। कसी भी दर्शक के पास समय व्यर्थ करने का आग्रह नहीं होता। अतः वह एक नाटक को देखने अथवा उसे अनुभव करने के लए बैठता है , ज्यादा अ धक समय लगने से नाटक में बोरियत होती है। अतः नाटक में समय का बंधन आवश्यक है।इसके अंतर्गत आरंभ, संघर्ष तथा समापन तीन प्रमुख स्थितियां आती है। जिसे निश्चित समय के अंतराल पर समाप्त कया जाना चाहिए।

2 शब्द -

शब्दों का चयन नाटक या कसी भी साहित्य को सफल बनाता है। हमें नाटक के अनुसार ही शब्दों का चयन कया जाना चाहिए। जैसे ऐतिहा सक नाटक है तो ऐतिहा सक शब्दों का अर्थात उस समय प्रयोग

होने वाले शब्दों का ही प्रयोग कया जाना चाहिए। शब्द नाटक तथा समय के साथ तारतम्यता बैठाने में सहायक होते हैं। जो दर्शकों को बांधे रखने का एक कारगर उपाय है।

3 कथ्य **(**कथानक**) -**

कथानक पूरे नाटक का समग्र रूप होता है। इसके अंतर्गत नाटककार को वशेष रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता है। क्यों क नाटक का वषय चयन करते समय उसको उसकी भाषा शैली , परिवेश , वस्त्र-परिधान आदि समस्त रूपों को नाटक में समाहित करना चाहिए नाटककार को यह भी ध्यान रखना चाहिए क उसके कथानक दुखांतक न हो।

अक्सर देखा गया है जिस नाटक में दुख के क्षणों से नाटक का समापन हुआ है , वह नाटक कभी सफल नहीं हुए हैं।

अतः नाटक की योजना करते समय आरंभ - सुख-दुख कसी भी स्थिति से की जा सकती है। उसका संघर्ष - सुख के लए तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लए होना चाहिए। और अंत में समापन उसके सुख की प्राप्ति तथा लक्ष्य की प्राप्ति से होना चाहिए।

4. संवाद **-**

नाटककार को नाटक में संवाद पर वशेष ध्यान देना चाहिए। क्यों क संवाद ही नाटक को सार्थक बनाते हैं। नाटक में संवाद छोटे-छोटे तथा पात्रों के अनुकूल होने चाहिए। कसी ऐसे संस्कृत निष्ठ या क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए जो दर्शकों को बो झल या समझ में ना आए।

5. द्वंद **(**प्रतिरोध**)**

नाटक में द्वंद या प्रतिरोध की स्थिति मध्य में आती है , जब नायक वपरीत परिस्थितियों में घिर जाता है। तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लए संघर्ष करता है। यह स्थिति दर्शकों तक पहुंचने का आदर्श स्थिति होती है। इस समय दर्शक उस पात्र तथा नाटक से सीधा जुड़ जाता है। उस नायक में स्वयं के प्रतिरूप को देखने लगता है अतः इस स्थिति को रंगमंच पर उपस्थित करने के लए वशेष सावधानी रखनी चाहिए।

6 चरित्र योजना

कथानक के अनुसार चरित्र योजना की व्यवस्था की जानी चाहिए।

अगर कथानक कसी ग्रामीण परिवेश का है तो उसके पात्रों का चरित्र चत्रण भी ग्रामीण परिवेश के अनुसार ही होना चाहिए। कथानक से अलग हटकर पात्रों का चरित्र चत्रण कया गया तो वह बेमेल होगा। यहां नाटक के असफल होने की पूरी संभावना रहेगी।

कहने का तात्पर्य है क अगर ग्रामीण परिवेश का दृश्य है तो उसमें कृषक या खेती करता हुआ मजदूर आदि को ही दिखाया जाना चाहिए। ना क कोई शहरी कोट पैंट पहना व्यक्ति उसमें दिखाया जाए।

7. भाषा शल्प

भाषा का भी वशेष महत्व होता है , जिस प्रकार का कथानक तैयार कया जाता है उसी प्रकार की भाषा शैली का भी प्रयोग कया जाना चाहिए। ग्रामीण परिवेश का दृश्य है या कसी वशेष समाज इतिहास आदि से संबं धत है तो भाषा शैली का भी प्रयोग उसके अनुसार कया जाना चाहिए।

उससे संबं धत भाषा का प्रयोग करने से दर्शक अ धक सु वधाजनक रूप से जुड़ जाते हैं,

अन्यथा दृश्य काव्य और भाषा आपस में तारतम्यता नहीं बिठा पाते। नाटककार को चाहिए क भाषा शल्प कथानक के अनुरूप तथा पात्रों के अनुरूप रखें। कोई पढ़ा- लखा शहरी व्यक्ति है तो उसकी भाषा शैली में पढ़े ल खए श क्षत व्यक्ति का परिचय मलना चाहिए। अगर कोई अनपढ़ गवार व्यक्ति है तो उसकी शब्दावली वैसी ही होनी चाहिए।

8 ध्वनि योजना -

दृश्य काव्य एक ऐसी साहित्य की वधा है जो दृश्य , श्रव्य तथा पाठ्य तीनों रूपों से संबं धत है। वशेष रुप से इसमें रंगमंचीता का गुण वद्यमान रहता है। साहित्यकारों के अनुसार दृश्य काव्य को रंगमंच के अनुरूप माना गया है। दृश्य काव्य वह है जिसे रंगमंच पर दिखाया जा सके।

3.3कहानी लेखन

कहानी लेखन या **Story Writing** गद्य लेखन की एक कला है जिसमें जीवन की कसी सच्ची घटना या कल्पना की गई घटना का रोचक वर्णन होता है । मन में उपजे वचारों का सही ढंग से प्रस्तुतिकरण ही कहानी लेखन कहलाता है ।

कहानी हमेशा आसान और सरल शब्दों में लखी जाती है जिसे जनमानस पढ़ और समझ सके । कहानी लखते समय उसकी कोई दशा या दिशा तय नहीं होती है और इसे मुक्त प्रवाह में लखा जाता है । उदाहरण के तौर पर दो बैलों की कथा, उसने कहा था, हार की जीत, चीफ की दावत आदि कहानियां ही हैं । ये सभी काफी प्रच लत कहानिकारों की प्रच लत कहानियां हैं ।

कहानी लेखन तत्व

जब भी कोई कहानी लखी जाती है तो कहानी लेखन के तत्वों को ध्यान में रखा जाता है । हालां क जरूर नहीं क सभी तत्वों को एक ही कहानी में परोया जाए, तभी जाकर कहानी बन सकेगी । च लए इन **story writing elements** के बारे में जानते हैं:

1. *पात्र*

पात्र यानि चरित्र कसी भी कहानी में जान डाल देते हैं । कहानी लेखन में बेहतरीन पात्रों का होना जरूरी होता है । कहानी की वषयवस्तु के हिसाब से लेखक इन पात्रों का निर्माण करता है । अगर कहानी की वषयवस्तु या पृष्ठभू म गांव है तो उसके कुछ या सारे या मुख्य करदार गांव के ही होंगे । यानि परिस्थिति और कथावस्तू को ध्यान में रखते हुए पात्रों का निर्माण कया जाता है ।

Story Writing के लए पात्रों का चयन बहुत ज्यादा जरूरी होता है । **Characters** यानि पात्रों के भी अलग अलग प्रकार होते हैं:

नायक

प्रतिपक्षी (खलनायक)

गतिशील चरित्र (परिस्थिति के अनुरूप नायक/खलनायक)

स्थिर चरित्र (परिस्थिति का जिनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है)

2. कथावस्तु

Story Writing के लए अगला महत्वपूर्ण तत्व कथावस्तु का है । कथावस्तु यानि **Plot** ही कसी भी कहानी की आत्मा होती है यानि जिसके बिना कहानी का अस्तित्व संभव नहीं है । एक कहानी में कौन

कौन सी मुख्य घटनाएं होंगी, पात्रों का कहानी में स्थान और योगदान क्या होगा, कहानी की मूल समस्या और समाधान क्या है आदि कथावस्तु के ही अंतर्गत आते हैं ।

कथावस्तु या **plot structure** के भी **5** मुख्य तत्व होते हैं:

कहानी का परिचय

कहानी की मूल समस्या

कहानी का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा

महत्वपूर्ण हिस्से के बाद के परिणाम

कहानी का अंत

3. *चरित्र चत्रण*

सर्फ पात्रों के नाम या पृष्ठभू म तय करने भर से कहानी नहीं बन सकती है । आपको कहानी के सभी पात्रों का चरित्र चत्रण करना होगा । इसके लए सबसे पहले तय करें क कहानी के पात्र कौन कौन हैं और वे कस प्रकार के पात्र हैं । इसके बारे में ऊपर ही जानकारी दी गई है । अगर आपका पात्र या चरित्र नायक है तो उसके हिसाब से ही आप नायक को संवाद देंगे ।

इसके अलावा चरित्र चत्रण की सबसे बड़ी भू मका यह होती है क यही आपकी कहानी की दिशा और दशा का निर्धारण करता है । इससे पाठक को भी समझ आता है क वह कस प्रकार से बातें करेगा, उसकी सोच और कार्य क्या होंगे । इस तरह चरित्र चत्रण या जिसे **character sketch** कहते हैं, बहुत जरूरी होता है ।

4. *संवाद*

अगला महत्वपूर्ण **story writing element** है संवाद यानि क आपकी कहानी के पात्र क्या बोलेंगे या अन्य पात्रों से कैसे संवाद करेंगे । सही संवाद कहानी को आगे बढ़ाते हैं और पाठक के लए कहानी पढ़ना भी रोचक हो जाता है । अक्सर हम वहीं कहानियां पढ़ने में ज्यादा रु च दिखाते हैं जिनमें संवाद हो । संवाद की मदद से कहानी के दृश्यों में भावना प्रवाह होता है ।

अगर आप कहानी लखने जा रहे हैं तो कसी भी **key moment** या **climax** के पहले संवाद को रखें । इससे कहानी को बल मलेगा और क्लाइमैक्स ज्यादा रोचक होगा । हालां क पूरे कहानी लेखन में एक बात का हमेशा ध्यान रखा जाना चाहिए क संवाद लंबे लंबे न हो । इससे पाठक उबाऊ महसूस करता है ।

5. *देशकाल एवं वातावरण*

कहानी लेखन में अगला तत्व देशकाल एवं वातावरण का है । अगर आपकी कहानी **dynamic scenes** और **environment** की मांग करती है तो इस तत्व को आप शा मल कर सकते हैं । जब बात **book review** यानि पुस्तक समीक्षा की आती है तो इस तत्व को भी बारीकी से परखा जाता है इस लए जरूरी है क आप इस स्टोरी राइटिंग तत्व का सही ढंग से इस्तेमाल करें ।

अगर आप **200** वर्ष पहले कसी गांव की कहानी लख रहे हैं तो जगह और वातावरण दोनों पर आपको वशेष ध्यान रखने की जरूरत होती है । ले कन अगर आप कोई सामान्य कहानी लख रहे हैं जिसमें ज्यादा जरूरी संवाद या कोई मौ लक संदेश है तो देशकाल एवं वातावरण की अनिवार्यता नहीं होती है ।

6. *भाषा शैली*

भाषा शैली का सीधा सा अर्थ है कसी भाषा को लखने का ढंग । सही समय पर सही शब्दों का चयन काफी महत्वपूर्ण होता है । एक **Story Writer** को सबसे पहले यह तय करना चाहिए क उसकी कहानी का पाठक कौन है या कस उम्र/ लंग/भाषा/क्षेत्र के लोग उसे पढ़ेंगे, इसी हिसाब से भाषा शैली को अपनाना चाहिए ।

शैली कसी रचना की सबसे बड़ी प्रेरणा है । इससे न सर्फ साहित्य बल्कि भाषा का भी वस्तार होता है इस लए कहानी के मुख्य तत्वों में शैली/भाषा शैली का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है ।

7. उद्देश्य

Story Writing का अंतिम तत्व है उद्देश्य यानि कहानी का उद्देश्य । हर कहानी का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है बल्कि कहानी लखी ही इस लए जाती है ता क कसी उद्देश्य की पूर्ति की जा सके । कहानियां संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक वकास में महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं । इन्हीं तीनों में से या तीनों उद्देश्यों को एक कहानी लेखक साधता है ।

आप जब भी कोई कहानी लखें तो सबसे पहले उसका एक उद्देश्य निर्धारित कर लें । उद्देश्य निर्धारण से कहानी लखने, संवाद बनाने और मुख्य घटनाओं को लखना काफी आसान हो जाता है । आपकी कहानी का उद्देश कुछ भी हो सकता है ।

3.4 क वता लेखन

काव्य, क वता या पद्य, साहित्य क वह वधा है जिसमे मनोभावों को कलात्मक रूप से कसी भाषा के द्वारा अ भव्यक्त कया जाता है। अर्थात काव्यात्मक रचना या क व की कृति, जो छंदों क श्रृंखलाओं में व धवत बाँधी जाती हैं, क वता कहलाती हैं।

क वता हमारी संवेदना के निकट होती है। वह हमारे मन को छू लेती है। कभी-कभी झकझोर देती है। क वता के मूल में संवेदना है, राग तत्त्व है। यह संवेदना, सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है। यह वही संवेदना है जिसने रत्नाकर डाकू को मह र्ष वाल्मी क बना दिया था।

क वता के तत्त्व

क वता क संरचना में बहुत सारे तत्व होते हैं। क व की कल्पना, वैयक्तिक सोंच, परिवेश, परिस्थितियाँ, भाषा छंद, बिंब, रस आदि एक साथ मलकर सुन्दर काव्य का निर्माण करते हैं। क व की प्रतिभा इन सब तत्वों के आधार पर ऐसी सबल अ भव्यक्ति करती है क वह रचना अमर हो जाती है। क व के मन की गंभीर अनुभूति क वता का रूप धारण कर लेती है।

जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ क व क पीड़ा को दर्शाती है-

जो घनीभूत पीड़ा सी

मस्तक में स्मृति-सी छाई

दुर्दिन में आंसू बनकर

वह आज बरसने आई

क वता के लेखन में शब्दों का महत्त्व

क वता का कलेवर शब्दों से बनता है। सार्थक शब्दावली क वता की जान होती है। शब्द में शक्ति होती है। यदि इसका उ चत प्रयोग कया जाये तो शब्दावली काव्य में चमत्कार उत्पन्न कर देती है। अंग्रेजी क व डब्ल्यू. एच. ऑर्डेन ने भी कहा क **Play with the words** अर्थात शब्दों से खेलना सीखो।

शब्दों से खेलने का तात्पर्य, शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतों को खोलना, शब्दों के मेल-जोल बढ़ाने से है। क व अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से ही आकार देता है। शब्दों का चयन, उनका गठन और भावानुसार लयात्मक अनुशासन सबल काव्य रचना में वशेष महत्त्व रखते हैं।

क वता में छंद का महत्त्व

छंद क वता का अनिवार्य तत्त्व है। यह क वता का शरीर है। क वता में आंतरिक लय के लए छंद की समझ ज़रूरी है। क वता छंदयुक्त और छंदमुक्त दोनों प्रकार से लखी जाती है।

काव्य में छंद का महत्त्व:

क वता में छंद के प्रयोग से पाठक या श्रोता के हृदय में सौंदर्य बोध की गहरी अनुभूति होती है। छंद में यति गति के सम्यक निर्वाह से पाठक को सु वधा होती है। छंदबद्ध क वता को सुगमता से कंठस्थ कया जा सकता है। छंद से क वता में सरसता, गेयता के कारण अ भरु च बढ़ जाती है। मानवीय भावनाओं को झंकृत कर उसके नाद सौंदर्य में वृ द्ध करता है।

क वता में बिंब का महत्त्व

बिंब क वता की दुनिया का महत्त्वपूर्ण उपकरण है। हमारे पास दुनिया को जानने का एकमात्र सुलभ साधन इन्द्रियाँ ही हैं। बाहरी संवेदना मन के स्तर पर बिंब के रूप में बदल जाती है। जब कुछ वशेष शब्दों को सुनकर अनायास मन के भीतर कुछ चत्र उभर आते हैं तो ये स्मृति चत्र ही शब्दों के सहारे क वता का बिंब नि र्मत करते हैं। वता में बिंबों का व शष्ट महत्त्व है। जयशंकर प्रसाद प्रकृति का मानवीकरण करते हुए बिंब प्रस्तुत करते हुए उषा का चत्र खींच देते हैं-

बीती वभावरी जाग री, अंबर पनघट में डुबो रही, ताराघट उषा नागरी।

क वता में चत्रों या बिंबों का प्रभाव अ धक पड़ता है। क व ने यहाँ उषाकालीन बेला को पनघट पर जल भरती हुई स्त्री के रूप में चत्रित कया है। अतः क वता की रचना करते समय दृश्य और बिंब की संभावना तलाश करनी चाहिए। ये बिंब सभी को आक र्षत करते हैं। बिंब हमारी ज्ञानेन्द्रियों को केंद्र में रखकर नि र्मत होते हैं, जैसे-चाक्षुष, घ्राण, आस्वाद्य, स्पर्श्य और श्रव्य।

3.4 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (REFERENCE)

- भाषा और हिंदी भाषा का इतिहास, प्रौ नरेश मश्र,वाणी प्रकाशन
- व्यवहारिक हिंदी व्याकरण , संजय प्रकाशन
- शब्दार्थ प्रयोग,डा हरदेवबाहरी, अ भव्यक्ति प्रकाशन
- आधुनिक मी डया लेखन एवं हिंदी रचना , डा अशोक बत्रा , लक्ष्मी पब्लिकेशन
- [मी डया लेखन,डा चन्द्रप्रकाश,संजय प्रकाशन
- "मी डया अध्ययन: महत्वपूर्ण मुद्दे और वाद- ववाद" - ई वन देवेरक्स
- "भाषा और मी डया: छात्रों के लए एक संसाधन पुस्तक" - एलन ड्यूरेंट
- "मी डया और भाषा: वद्या र्थयों के लए एक सम्प्रेषण पुस्तक" - व. जेम्स पॉटर
- "पत्रकारिता नैतिकता: एक दार्शनिक दृष्टिकोण" - क्रस्टोफर मेयर्स
- "मी डया, भाषा, और पहचान: एक परिचय" - डे वड गॉन्टलेट

SUBJECT: LANGUAGE AND MEDIA-1(HINDI)	
COURSE CODE: BAMC-104	AUTHOR: MR. ASHOK KUMARR
LESSON NO.: 04	
प्रंट मी डया की भाषा	

पाठ की संरचना **(LESSON STRUTURE)**

4.0 अ धगम उद्देश्य

4.0.1 परिचय **(INTRODUCTION)**

4.1 प्रंट मी डया और इसके मुख्य वशेषताएँ

4.2 प्रंट मी डया की भाषा के प्रकार

4.3 प्रंट मी डया की भाषा का वकास

4.4 प्रंट मी डया की भाषा का महत्व

4.5 प्रंट मी डया की भाषा की सीमाएं

4.6 सारांश **(Summary)**

4.7 स्वं मूल्यांकन हेतू प्रश्न **(Self Assessment Qustions)**

4.8 प्रगति जांच **(Check Your Progress)**

4.9 संकेतक एव शब्द**(Key Words)**

4.10 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री **(Reference)**

4.0 LEARNING OBJECTIVES अ धगम उद्देश्य

वद्यार्थी निम्न ल खत वषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और अ धगम करने में सक्षम होंगे

1. प्रंट मी डया का स्वरूप
2. प्रंट मी डया की भाषा के प्रकार
3. प्रंट मी डया की भाषा का वकास
4. प्रंट मी डया की भाषा का महत्व
5. प्रंट मी डया की भाषा की सीमाएं

4.0.1 परिचय **(INTRODUCTION):**

प्रंट मी डया और भाषा वचारकों के लए एक गहरी समझार्थ चत्रित करने वाले क्षेत्र हैं। यह दो बहुत महत्वपूर्ण प्राधान्य रखते हैं जो समाचार, जानकारी, और वचारों को लोगों तक पहुंचाने का काम करते हैं। प्रंट मी डया, जैसे क अखबार, पत्रिकाएँ, और मैगजीन्स, वशेष रूप से सामाजिक जागरूकता और सोच को आक्रम णत करने में महत्वपूर्ण हैं, और यह भाषा के माध्यम से अपने पाठकों को जानकारी प्रदान करते हैं।

इस अध्याय में, हम प्रंट मी डया की भाषा के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे। हम जानेंगे क प्रंट मी डया की भाषा कैसे व शष्ट होती है, उसके व भन्न प्रकार क्या होते हैं, और इसके वकास के इतिहास के पीछे के गहरे मोमेंट्स क्या हैं। हम यह भी समझेंगे क इसकी भाषा के कैसे सीमाएँ होती हैं, जैसे क भाषा की वशेषता, संवाद की स्वतंत्रता, और व वध भाषाओं का उपयोग।

इस अध्याय के माध्यम से हम उन प्रमुख मुद्दों को वचार करेंगे जो प्रंट मी डया की भाषा को गहराई से समझने में मदद करेंगे, और हमें इस महत्वपूर्ण माध्यम के योगदान की महत्वपूर्ण भू मका का परिचय देंगे।

Print Media: - प्रंट मी डया मुख्य रूप से समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से समाचार बताने का मुद्रित संस्करण है. प्रंट मी डया वह मी डया है जो हमें ल खत जानकारी देता है।

सरल शब्दों में, प्रंट मी डया संचार के लए आवश्यक कोई ल खत या प्रका शत सूचना है. यह जनसंचार का ल खत या चत्रमय रूप है. प्रंट मी डया संचार के सबसे पुराने और बुनियादी रूपों में से एक है. प्रंट मी डया यांत्रिक या इलेक्ट्रॉनिक रूप से फोटोकॉपी द्वारा उत्पन्न होता है।

प्रंट मी डया एक प्रकार का जनसंचार है जो मुद्रित प्रकाशनों के माध्यम से समाचार और सूचना का उत्पादन और प्रसार करता है

आम जनता इस डेटा और चत्रों को मुद्रित रूप में प्राप्त करती है, जिसे हार्ड कॉपी कहा जाता है।

प्रंट मी डया के सबसे अच्छे उदाहरण पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, पैम्फलेट आदि हैं।

पत्रिका **{Magazine}**

एक पत्रिका एक आव धक प्रकाशन है, जो आमतौर पर साप्ताहिक या मा सक रूप से प्रका शत होता है, जिसमें व भन्न प्रकार की सामग्री होती है. यह आवश्यक नहीं है क यह केवल साप्ताहिक या मा सक ही प्रका शत हो, पत्रिका त्रैमा सक, अर्धवा र्षक, वा र्षक और अनियतकालीन में भी प्रका शत होती है।

द जेंटलमैन्स मैगज़ीन, पहली बार वर्ष **1731** में लंदन में प्रका शत हुई थी, जो पहली सामान्य-रु च वाली पत्रिका थी।

पत्रिका के उदाहरण - टाइम पत्रिका, इं डया टुडे, फोर्ब्स इं डया, आउटलुक, बिजनेस टुडे, बिजनेस वर्ल्ड आदि।

पुस्तकें **{Books}**

आज की दुनिया में, पुस्तक सबसे प्रभावी जनसंचार माध्यमों में से एक है. यह शक्षा का सबसे अच्छा स्रोत है. पुस्तकें ज्ञान और साहित्य को संग्रहीत करने और दूसरों तक पहुँचाने का सबसे अच्छा और सस्ता साधन है।

हो र्डंग **{Billboards}**

हो र्डंग एक स्थानीय क्षेत्र में वज्ञापन देने का एक तरीका है, जिसे आमतौर पर राजमार्गों में लगाया जाता है।

पोस्टर **{Posters}**

स्थानीय क्षेत्र में कसी भी उत्पाद और सेवाओं के वज्ञापन के लए पोस्टर बहुत उपयोगी होते हैं।

न्यूज़लेटर्स और पोस्टकार्ड **{Newsletters and Postcards}**

न्यूज़लेटर्स एक एकल वषय को कवर करने वाला प्रकाशन है. न्यूज़लेटर्स आमतौर पर एक ही वषय या घटना के आसपास बनाए जाते हैं, जिनका उपयोग प्रचार के साथ-साथ राजनीतिक अ भयानों के लए भी कया जाता है।

प्रंट मी डया की वशेषता

प्रंट मी डया हल्के, पोर्टेबल, डस्पोजेबल प्रकाशन हैं जो कागज पर मुद्रित होते हैं और भौतिक प्रतियों के रूप में प्रसारित होते हैं जिन्हें हम कताबें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं और न्यूजलेटर कहते हैं।

प्रंट मी डया की उत्पत्ति और वकास

देखा जाए तो संख्याओं में लखे गए दस्तावेज़ **8000** ईसा पूर्व तक के हैं, इसी लए ये कोई भी नही बता सकता क प्रंट मी डया की उत्पत्ति कब हुई. हजारों सालों पहले संख्याओं के लए इस्तेमाल की जाने वाली प्राचीन संस्कृतियों के प्रतीक अंततः शब्दों के लए भी प्रतीक बन गए, जिससे ल खत पाठ का वकास हुआ. मनुष्य **3200** ईसा पूर्व से शब्दों को पढ़ और लख रहे हैं, ले कन पहले यह एक दुर्लभ कौशल था, जो ज्यादातर शास्त्रियों, वद्वानों और पुजारियों तक ही सी मत था।

ले कन जब जोहान्स गुटेनबर्ग ने पुनर्जागरण के दौरान अपने प्रंटिंग प्रेस का आ वष्कार कया, तो यह एक गेम-चेंजर था. पांच सदियों बाद इंटरनेट की तरह ही, प्रंटिंग प्रेस के प्रभाव ने लोगों के सीखने, ज्ञान साझा करने, राय फैलाने और खुद को खुश करने के तरीके को बदल दिया।

प्रंट मी डया का पतन **{Decline of Print Media}**

इंटरनेट के आने के बाद से प्रंट मी डया को इलेक्ट्रॉनिक मी डया से कंपीटिशन फेस करना पड़ा रहा है. इलेक्ट्रॉनिक मी डया की तेजी से बढ़ती लोक प्रयता प्रंट मी डया के आकर्षण को कम कर रही है।

आज बहुत से लोग अखबारों और पत्रिकाओं को हार्ड कॉपी में पढ़ने के बजाय इंटरनेट के माध्यम से पढ़ रहे हैं, दूसरा अब वज्ञापन के लए डजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कया जा रहा है, ये सभी चीजें प्रंट मी डया की घटती हुई लोक प्रयता को दर्शाती हैं।

ले कन यह कह देना क प्रंट मी डया जल्द ही खत्म हो जाएगा, सही नहीं है, अभी भी प्रंट मी डया की अपनी भू मका है. भ वष्य में जब मेटावर्स और वर्चुअल रिय लटी जैसी तकनीकें आएंगी तो शायद प्रंट मी डया का इस्तेमाल बंद हो जाएगा।

प्रंट मी डया के फायदे और नुकसान

प्रंट मी डया के फायदे

प्रंट मी डया संचार का सबसे वश्वसनीय तरीका है. लाभों की बात करें तो प्रंट मी डया को प्रसारण मी डया और न्यू मी डया की तुलना में अपनी शैली में सबसे सटीक और भरोसेमंद माना जाता है क्यों क यह अफवाहों और झांसे के प्रसारण के बजाय वास्त वक कहानी प्रस्तुति पर ध्यान केंद्रित करता है।

प्रंट मी डया कसी वशेष भौगो लक क्षेत्र में जागरूकता फैलाने या वज्ञापन देने का एक आसान माध्यम है. जैसे, स्थानीय समाचार पत्र कसी भी स्थानीय घटना के बारे में समाचार फैलाने का सबसे अच्छा तरीका है

स्थानीय स्तर पर, प्रंट मी डया के माध्यम से उत्पादों और सेवाओं का वज्ञापन अभी भी सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है. उदाहरण के लए, आज भी हम स्थानीय दुकान, जिम, अस्पताल और स्कूल का वज्ञापन करने के लए पोस्टर और बैनर का उपयोग करते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मी डया की तुलना में प्रंट लेख पर पूरी तरह से अ धक ध्यान देना आसान है. हम ऑनलाइन प्रकाशन पढ़ते समय लाइव चैट पॉप-अप, सोशल अकाउंट संदेशों से वच लत हो सकते हैं।

कताबों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है. पहले के समय में ज्ञान का प्रसार मौ खक रूप में होता था, ले कन प्रंटिंग प्रेस के आगमन के बाद, हमने पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान का संचार शुरू कया. ज्ञान के प्रसार में पुस्तकों की अहम भू मका रही है. आज हमने जो भी प्रगति की है उसमें प्रंट मी डया ने महत्वपूर्ण भू मका निभाई है।

उपभोक्ता आदतों को प्रभा वत करने के लए कंपनियां अभी भी प्रंट मी डया का उपयोग करती हैं।

प्रंट मी डया के नुकसान

इसमें कोई संदेह नहीं है क प्रंट मी डया ने पहले के समय में ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भू मका निभाई थी, ले कन आज के आधुनिक समय में प्रंट मी डया धीरे-धीरे अपना आकर्षण खोता जा रहा है।

प्रंट मी डया के उत्पादन के लए स्याही का उपयोग करना पड़ता है. कुछ आधुनिक निर्माताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली जहरीली स्याही और ब्लीच का आसपास के वातावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

इसके अलावा कागज उत्पादन के लए सामग्री को तोड़ने के लए आवश्यक रसायन धुएं का उत्सर्जन करते हैं. ये धुंआ कागज की फैक्ट्रियों में काम करने वालों के लए जहरीला होता है, कुछ रसायन बाद में जीवन में गंभीर श्वसन समस्याओं का कारण बन सकते हैं।

प्रंट मी डया **24/7 {**चौबिसो घंटा**}** उपलब्ध नहीं रहता है. प्रंट मी डया को समाचार फैलाने में समय लगता है. उदाहरण के लए, प्रंटर दैनिक, साप्ताहिक या मा सक समाचार पत्र तैयार करते हैं. जबकी इलेक्ट्रॉनिक मी डया हमेशा उपलब्ध रहता है "लाइव।

प्रंट मी डया के लए पाठक को जानकारी पढ़ने के लए साक्षर होना आवश्यक है. जब क, इलेक्ट्रॉनिक मी डया के माध्यम से जानकारी जानने के लए साक्षरता महत्वपूर्ण नहीं है क्यों क उपभोक्ता वी डयो देख सकते हैं या ऑ डयो संस्करण सुन सकते हैं।

पाठकों को प्रंट मी डया के लए इलेक्ट्रॉनिक मी डया सब्स क्रप्शन की तुलना में अ धक भुगतान करना पड़ता है।

प्रंट मी डया के उत्पादन और वतरण में बहुत सा समय और पैसा लगता है।

प्रंट मी डया की पहुंच सी मत है, आप प्रंट मी डया के माध्यम से वैश्विक दर्शकों को ल क्षत नहीं कर सकते।

4.1 प्रंट मी डया और इसके मुख्य वशेषताएँ

प्रंट मी डया वह मी डया होता है जिसमें जानकारी और समाचार प्रकट कए जाते हैं और यह छपे हुए बहुमुखी माध्यम के रूप में प्रसारित होता है। इसमें लखावट, चत्र, ग्रा फक्स, और अन्य माध्यमों का उपयोग होता है जिससे संदेशों को प्रस्तुत कया जा सकता है।

प्रंट मी डया की मुख्य वशेषताएँ निम्न ल खत होती हैं:

1. छपाई का स्वरूप: प्रंट मी डया का मुख्य वशेषता यह है क यह छपाई के रूप में होता है, जिसमें लखावट, चत्र, और अन्य जानकारी पैपर, मैगजीन, पुस्तक, और अन्य सूचना स्रोतों पर प्रकट की जाती है।

2. स्थायिता: प्रंट मी डया स्थायी होता है, यानी क एक बार छपाई गई जानकारी अदिरोहित रूप से बची रहती है और उसे बार-बार पढ़ा जा सकता है।

3. पोस्ट प्रोसे संग की स्वतंत्रता: प्रंट मी डया में लेखन, संपादन, और डज़ाइन में आवश्यक समय लगता है, और यहां पर पोस्ट प्रोसे संग की स्वतंत्रता होती है ता क जानकारी को सुधारा जा सके।

4. ब्रॉड कवरेज: प्रंट मी डया का वशेषता यह है क यह एक बड़े लोगों तक पहुंच सकता है और व भन्न लोगों के लए भन्न-भन्न प्रकार की जानकारी प्रस्तुत कर सकता है।

5. परंपरागतता: प्रंट मी डया अक्सर एक परंपरागत स्रोत के रूप में माना जाता है और लोगों के बीच सुचना को पास करने का माध्यम रहा है।

प्रंट मी डया एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत होता है और समाचार, वशेष जानकारी, और वचारों को लोगों तक पहुंचाने का माध्यम है।

4.2 प्रंट मी डया की भाषा के प्रकार

प्रंट मी डया की भाषा के कई प्रकार होते हैं, जो व भन्न जनरों और सामाजिक प्रवृत्तियों के साथ आते हैं। निम्न ल खत हैं प्रमुख प्रकार:

1. खबर लेखन **(News Writing):** खबर लेखन एक ऐसा प्रकार है जिसमें समाचार घटनाओं की जानकारी तेजी से और सं क्षप्त भाषा में प्रस्तुत की जाती है। खबर में **"5W1H" (Who, What, Where, When, Why, How)** की जानकारी प्रस्तुत की जाती है ता क पाठक समय की बचत कर सकें।

2. साक्षरता कॉलम **(Opinion Columns):** साक्षरता कॉलम्स में लेखक अपने वचार, राय, और वचारों को साझा करते हैं। यहां पर व्यक्तिगत दृष्टिकोण और मतभेद को बढ़ावा दिया जाता है, और अक्सर समाचार और खबरों पर टिप्प णयाँ दी जाती हैं।

3. समाचार लेखन **(Feature Writing):** समाचार लेखन में वशेष घटनाओं, व्यक्तिगत प्रोफाइल्स, और व भन्न कस्म की जानकारी को गहराई से अनुसंधान करके प्रस्तुत कया जाता है। यहां पर कहानियों को जीवंत और दिलचस्पी तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास कया जाता है।

4. संपादन **(Editorials):** संपादन आमतौर पर अखबार या पत्रिकाओं के सम्पादकीय अनुभाग में प्रकट कए जाते हैं और इसमें संपादक की राय या प्रशंसा व्यक्त की जाती है।

5. वशेष लेखन **(Specialized Writing):** इसमें वशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में लखे जाने वाले लेख शा मल होते हैं, जैसे क वज्ञान लेखन, वत्त लेखन, साहित्यिक लेखन, और अन्य वशेष वषयों पर आधारित लेख।

6. वचार **(Op-Eds):** वचार लेखन, या ऑप-एड्स, में गुरुत्वाकर्षक रूप से प्रस्तुत कए जाने वाले वचार होते हैं, जो अक्सर समाचार और महत्वपूर्ण मुद्दों पर लखे जाते हैं।

इन प्रकारों की भाषा का प्रयोग प्रंट मी डया में समाचार और सूचना प्रस्तुत करने, वचारों का व्यक्त करने, और जानकारी प्रस्तुत करने के लए कया जाता है।

4.3 प्रंट मी डया की भाषा का वकास

प्रंट मी डया की भाषा का वकास का इतिहास बहुत ही रोचक है और यह मी डया के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में माना जाता है। निम्न ल खत हैं कुछ महत्वपूर्ण मोमेंट्स:

1. प्रेस के पहले दिन **(Invention of the Printing Press):** प्रंट मी डया का जन्म **15**वीं सदी में जर्मनी के जोहननेस गुटेनबर्ग द्वारा इंजन्यूइशन ऑफ प्रंटिंग प्रेस के आ वष्कार के साथ हुआ था। इससे पुस्तकों की मस्तिष्क में प्रकटता बढ़ी और ज्ञान का प्रसार आसान हो गया।

2. वप्रेषण और संवाद का वकास **(Development of Reporting and Discourse): 17**वीं और **18**वीं सदी में प्रंट मी डया की भाषा में वप्रेषण की प्र क्रया तेजी से बढ़ी। समाचार पत्रिकाएँ और मैगजीन लेखकों ने वशेष रूप से युद्ध, राजनीति, और सामाजिक मुद्दों पर लेखन कया।

3. स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन **(Support for Independence Movements):** प्रंट मी डया ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहा सक घटनाओं को समर्थन दिया और इनके बारे में समाचार और लेखन प्रस्तुत कया।

4. जनसंख्या और शक्षा का वकास **(Growth of Literacy and Education):** प्रंट मी डया ने जनसंख्या की वृ द्ध और शक्षा के क्षेत्र में सुधार को बढ़ावा दिया। समाचार पत्रिकाएँ और प्रंट मी डया के माध्यम से ज्ञान और शक्षा को लोगों तक पहुंचाने का काम कया।

5. मी डया के गोपनीयता और स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण मोमेंट्स **(Milestones in Media Privacy and Freedom):** प्रंट मी डया ने मी डया की स्वतंत्रता और गोपनीयता के मामले में कई महत्वपूर्ण मोमेंट्स को भी दर्ज कया है, जैसे क प्रेस को जिम्मेदारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानने का आदान-प्रदान।

प्रंट मी डया की भाषा का वकास का इतिहास हमें यह सखाता है क मी डया कैसे समाज, संगठन, और समाज की सोच को प्रभा वत करता है और कैसे यह सामाजिक, सांघटिक, और सां वदानिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है।

4.4 प्रंट मी डया की भाषा का महत्व

प्रंट मी डया की भाषा का महत्व बहुत अ धक होता है, और यह समाज में कई तरह के प्रभावों का कारण बनता है:

1.सूचना प्रसारण **(Information Dissemination):** प्रंट मी डया समाचार, जानकारी, और ज्ञान को लोगों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम होता है। यहां पर प्राप्त होने वाली जानकारी लोगों की जागरूकता बढ़ाने में मदद करती है और उन्हें अ धक सोचने के लए प्रोत्साहित करती है।

2.सार्वजनिक चर्चा **(Public Discourse):** प्रंट मी डया व भन्न मुद्दों पर वचार-मत साझा करने का माध्यम होता है। लोग इसके माध्यम से आपसी वाद- ववाद में भाग लेते हैं और अपने दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं।

3.सुचना की वै शष्ट्य **(Specificity of Information):** प्रंट मी डया जानकारी को वस्तारपूर्ण रूप से प्रस्तुत करने की अनुमति देता है, जिससे लोग वस्तार से और अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

4.सार्वजनिक योजना और नीतियों का प्रयोग **(Public Planning and Policy):** सरकारें और सरकारी संगठन प्रंट मी डया का प्रयोग सर्वजनिक योजनाओं और नीतियों के बारे में सूचना प्रस्तुत करने के लए करते हैं, जिससे लोगों को उनके बारे में जानकारी मलती है और उनके साथ भागीदारी का माध्यम बनता है।

5.सोशल चेंज **(Social Change):** प्रंट मी डया के माध्यम से लोगों को सामाजिक और सां वदानिक मुद्दों के बारे में जागरूक कया जाता है और वे सोशल चेंज की प्र क्रया में भाग लेते हैं।

6.व्यक्तिगत वकास **(Personal Development):** प्रंट मी डया लोगों की व्यक्तिगत वकास में भी महत्वपूर्ण भू मका निभाता है, क्यों क यह उन्हें वचारशीलता, ज्ञान, और समाज में सहयोगी नागरिक बनने में मदद करता है।

प्रंट मी डया की भाषा का महत्व है क्यों क यह समाज को समर्थन, जानकारी, और समाचार प्रदान करता है, जिससे लोग जागरूक और सु वचारी बनते हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन का हिस्सा बन सकते हैं।

4.5 प्रंट मी डया की भाषा की सीमाएं

प्रंट मी डया की भाषा की कई सीमाएँ होती हैं, जो इसकी वशेषता और प्रभाव को निर्धारित करती हैं:

1.भाषा की वशेषता **(Language Specificity):** प्रंट मी डया का प्रयोग व शष्ट भाषा में कया जाता है, और यह भाषा संदेश को स्पष्ट और सटीक ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करती है। यह भाषा अक्सर वशेष समाज, संगठन, या आवश्यकताओं के आधार पर चुनी जाती है।

2.संवाद की स्वतंत्रता **(Freedom of Discourse):** प्रंट मी डया में लेखकों को स्वतंत्रता मलती है क वे अपने वचार और राय को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करें। यह समाचार पत्रिकाएँ, कॉलम लेखकों, और साक्षरता कॉलम लेखकों के माध्यम से सामाजिक वचार-मत को प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

3.भाषाओं की व वधता **(Diversity of Languages):** प्रंट मी डया में व भन्न भाषाओं का उपयोग कया जाता है ता क व भन्न समुदायों और क्षेत्रों के लोगों तक संदेश पहुंच सके। यह भाषाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक व वधता को बढ़ावा देता है।

4.प्रकटन की प्र क्रया **(Editorial Process):** प्रंट मी डया में प्रकटन की प्र क्रया की जानकारी यथासंभाव सटीकता के साथ रखने की मांग करती है, और इसके लए संपादकीय नियम और गाइडलाइन्स का पालन करती है।

5.सां वदानिक और नैतिक सीमाएँ **(Ethical and Moral Boundaries):** प्रंट मी डया में नैतिकता और नैतिक सीमाओं का पालन करने की जिम्मेदारी होती है। यह वशेष ध्यान देता है क अखबार, पत्रिकाएँ, और मैगजीन उच्च नैतिक मानकों का पालन करें और समाज को सही दिशा में मार्गदर्शन करें।

प्रंट मी डया की भाषा की इन सीमाओं का पालन करने से यह सुनिश्चित होता है क लोगों को स्पष्ट और सटीक जानकारी मलती है, और इससे समाज में वचारों का बदलाव और सुधार की प्र क्रया में मदद मलती है।

4.6 सारांश (SUMMARY)

प्रंट मी डया की भाषा का संक्षेप:

· प्रंट मी डया का महत्व: प्रंट मी डया समाचार, जानकारी, और वचारों को लोगों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है जो सामाजिक चर्चा, सार्वजनिक योजनाएँ, सोशल चेंज, और व्यक्तिगत वकास में भू मका निभाता है।

· प्रंट मी डया की भाषा की वशेषताएँ: प्रंट मी डया की भाषा व शष्ट और स्पष्ट होती है, सां वदानिक और नैतिक सीमाओं का पालन करती है, और व भन्न भाषाओं का उपयोग करती है।

· प्रंट मी डया के प्रकार: खबर लेखन, साक्षरता कॉलम, समाचार लेखन, संपादन, वशेष लेखन, और वचार लेखन जैसे प्रकारों में प्रंट मी डया की भाषा का प्रयोग कया जाता है।

· प्रंट मी डया का वकास: प्रंट मी डया का आ वष्कार जोहननेस गुटेनबर्ग के द्वारा **15**वीं सदी में हुआ था, और इसके बाद के वकास के महत्वपूर्ण मोमेंट्स के बारे में जानकारी दी जाती है।

· प्रंट मी डया की भाषा की सीमाएँ: प्रंट मी डया की भाषा वशेष भाषा में होती है, लेखकों को स्वतंत्रता होती है अपने वचारों को व्यक्त करने की, और नैतिक सीमाओं का पालन करती है। यह भी व भन्न भाषाओं का उपयोग करती है।

प्रंट मी डया की भाषा का महत्व है क्यों क यह समाज को सूचना, सोच, और समाजिक परिवर्तन की दिशा में मदद करता है, और लोगों को सकारात्मक रूप से सामाजिक चर्चा में भाग लेने में मदद करता है।

4.7 स्वं मूल्यांकन हेतू प्रश्न **(SELF ASSESSMENT QUSTIONS)**

यहाँ पाँच स्वयंउपयोगी प्रश्न दिए गए हैं:

1. समाचार पत्रिकाओं की भाषा के कुछ उदाहरण दें जो भाषा की वशेषता को बढ़ावा देते हैं।

2. प्रंट मी डया के प्रकार और उनकी वशेषता क्या होती है, और यह कस प्रकार से सामाजिक चर्चा में भाग लेते हैं**?**

3. प्रंट मी डया की भाषा के वकास के इतिहास में क्या महत्वपूर्ण मोमेंट्स थे**?**

4. प्रंट मी डया के प्रमुख भाषा प्रकार और उनका उपयोग सामाजिक और सां वदानिक मुद्दों पर कैसे प्रभाव डालते हैं**?**

5. प्रंट मी डया की भाषा की सीमाएँ क्या होती हैं, और यह सीमाएँ समाचार और जानकारी के प्रसारण में कैसे मदद करती हैं?

4.8 प्रगति जांच (CHECK YOUR PROGRESS)

1. प्रंट मी डया के माध्यम से लोगों को _____मुद्दों के बारे में जागरूक कया जाता है

2 प्रंट मी डया में _____का पालन करने की जिम्मेदारी होती है।

3. साक्षरता कॉलम **(Opinion Columns):** साक्षरता कॉलम्स में लेखक अपने _____को साझा करते हैं।

4. प्रंट मी डया _____को लोगों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम होता है।

5. प्रंट मी डया _____होता है, यानी क एक बार छपाई गई जानकारी अदिरोहित रूप से बची रहती है और उसे बार-बार पढ़ा जा सकता है।

Answer. 1. सामाजिक और सां वदानिक

2 नैतिकता और नैतिक सीमाओं

3. वचार, राय

4 समाचार, जानकारी, और ज्ञान

5 स्थायी

4.9 संकेतक एव शब्द (KEY WORDS)

1. प्रंट मी डया **(Print Media):** यह शब्द प्रंट की मी डया जैसे अखबार, पत्रिकाएँ, और मैगजीन्स को सू चत करता है जो ल खत रूप में समाचार, जानकारी, और वचारों को प्रसारित करते हैं।

2. भाषा **(Language):** इस अध्याय में भाषा की महत्वपूर्ण भू मका होती है, और यह शब्द भाषा की वशेषता, सीमाएँ, और उपयोग को संकेतित करता है।

3. समाचार **(News):** प्रंट मी डया जो खबरों को प्रसारित करता है, उसका मुख्य ध्यान समाचार प्रसारण पर होता है, और यह शब्द समाचार लेखन और प्रसारण के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

4. वशेषता **(Specificity):** इस अध्याय में वशेषता का महत्व बताया जाता है, और यह शब्द जानकारों को सूचना को स्पष्ट और सटीक रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता को संकेतित करता है।

5. स्वतंत्रता **(Freedom):** प्रंट मी डया में स्वतंत्रता का महत्व होता है, जिसमें लेखकों को अपने वचारों और राय को स्वतंत्रता से व्यक्त करने का अ धकार होता है, और यह शब्द स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भू मका को संकेतित करता है।

4.10 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (REFERENCE)

- भाषा और हिंदी भाषा का इतिहास, प्रौ नरेश मश्र,वाणी प्रकाशन
- व्यवहारिक हिंदी व्याकरण , संजय प्रकाशन
- शब्दार्थ प्रयोग,डा हरदेवबाहरी, अ भव्यक्ति प्रकाशन
- आधुनिक मी डया लेखन एवं हिंदी रचना , डा अशोक बत्रा , लक्ष्मी पब्लिकेशन
- [मी डया लेखन,डा चन्द्रप्रकाश,संजय प्रकाशन

- "मी डया अध्ययन: महत्वपूर्ण मुद्दे और वाद- ववाद" - ई वन देवेरक्स
- "भाषा और मी डया: छात्रों के लए एक संसाधन पुस्तक" - एलन ड्यूरेंट
- "मी डया और भाषा: वद्या र्थयों के लए एक सम्प्रेषण पुस्तक" - व. जेम्स पॉटर
- "पत्रकारिता नैतिकता: एक दार्शनिक दृष्टिकोण" - क्रस्टोफर मेयर्स
- "मी डया, भाषा, और पहचान: एक परिचय" - डे वड गॉन्टलेट